सतना
09 जुलाई 2025 बुधवार

दैनिक
मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

मेरी चिंता मत करो...

@ पेज 7

एक देश-एक चुनाव संविधान के मूल ढांचे का उल्लंघन नहीं-पूर्व सीजेआई

नई दिल्ली। पूर्व चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा, लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराना संविधान के मूल ढांचे का उल्लंघन नहीं है। हालांकि, प्रस्तावित बिल में चुनाव आयोग को दी जाने वाली शक्तियों पर चिंता उन्होंने जताई है। पूर्व सीजेआई ने कहा कि इससे ईसीआई को विधानसभाओं का कार्यकाल बढ़ाने या घटाने की शक्ति मिल सकती है। उन परिस्थितियों को परिभाषित किया जाना चाहिए जिनमें ईसीआई इस शक्ति का इस्तेमाल कर सकता है। जस्टिस चंद्रचूड़ ने एक देश-एक चुनाव पर बनी संसदीय समिति को अपनी लिखित राय सौंपी है। कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने 17 दिसंबर, 2024 को लोकसभा में एक देश-एक चुनाव संविधान संशोधन बिल पेश किया था। पूर्व सीजेआई क्षेत्रीय और छोटी पार्टियों पर पड़ेगा असर जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि एक साथ चुनाव कराने से बेहतर आर्थिक स्थिति वाली नेशनल पार्टियों के प्रभाव से क्षेत्रीय और छोटी पार्टियां हाशिए पर जा सकती हैं।

मराठी भाषा विवाद-ठाणे में राज ठाकरे की पार्टी का प्रदर्शन

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में मराठी को लेकर विवाद के बीच ठाणे के भायंदर में महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ने प्रदर्शन किया। इस बीच महाराष्ट्र सरकार में मंत्री और स्थानीय विधायक प्रताप बाबूराव सरनाईक वहां पहुंचे, इससे एमएनएस कार्यकर्ता भड़के और उनका विरोध किया।

इससे पहले मंगलवार सुबह पुलिस ने महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के ठाणे-पालघर प्रमुख अविनाश जाधव समेत कई कार्यकर्ताओं को हिरासत में ले लिया है। जाधव के नेतृत्व में ये कार्यकर्ता ठाणे के भायंदर में व्यापारियों के विरोध प्रदर्शन के जवाब में एक रैली करने जा रहे थे। पुलिस ने इस रैली की परमिशन नहीं दी थी। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि मैंने पुलिस कमिश्नर से बात की है, उन्होंने बताया कि रैली के लिए नहीं, बल्कि सभा के लिए अनुमति मांगी गई थी।

भायंदर में ही 1 जुलाई को एक गुजराती दुकानदार को मराठी में बात न करने पर एमएनएस कार्यकर्ताओं ने मारपीट की थी। इसके विरोध में व्यापारियों ने कार्रवाई की मांग करते हुए प्रदर्शन किया था।

अहमदाबाद प्लेन क्रैश- 26 दिन बाद आई शुरुआती जांच रिपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो ने अहमदाबाद विमान हादसे के 26 दिन बाद प्राइमरी जांच रिपोर्ट मंगलवार को केंद्र सरकार को सौंपी।प्राइमरी रिपोर्ट शुरुआती जांच में मिले सबूतों और तकनीकी विश्लेषण के आधार पर तैयार की गई है। इससे पहले 28 जून को केंद्रीय नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोल ने बताया था कि विमान हादसे की जांच सभी पहलुओं से की जा रही है, जिसमें साजिश (सैबोटाज) की संभावना को भी खंगाला जा रहा है। वहीं, 3 महीने में विस्तृत जांच रिपोर्ट आ सकती है। 12 जून को अहमदाबाद से लंदन जा रही फ्लाइट एआई 171 टेकऑफ के कुछ ही देर बाद एक मेडिकल हॉस्टल की इमारत से टकरा गई थी। इसमें 270 लोगों की मौत हो गई थी, जिनमें 241 यात्री और क्रू मेंबर शामिल थे। सिर्फ एक यात्री इस हादसे में जिंदा बचा है।

पटना में गोपाल खेमका की हत्या बिल्डर ने कराई

पटना (एजेंसी)। बिहार के कारोबारी गोपाल खेमका की हत्या बिल्डर अशोक साह ने कराई थी। दोनों के बीच कारोबार को लेकर विवाद था। हत्या के लिए अशोक साह ने शूटर उमेश को हायर किया था। उमेश ने ही गोपाल खेमका को 4 जुलाई को घर के गेट पर गोली मारी थी। पुलिस ने सोमवार को बिल्डर अशोक साह, शूटर उमेश को गिरफ्तार किया। पुलिस ने शूटर के पास से 3 लाख कैश बरामद किया है। पुलिस ने बताया कि उदयगिरि अपार्टमेंट के फ्लैट संख्या 601 से अशोक साह को गिरफ्तार किया गया। इस फ्लैट में कभी कुख्यात अशोक सम्राट और बृजबिहारी का सहयोगी रत्नेश्वर साह भी रहता था। शूटर उमेश की निशानदेही पर पुलिस गन सप्लायर विकास से पूछताछ करने पटना सिटी के मालसलामी इलाके में पहुंची थी। इसी दौरान विकास ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई में पुलिस ने उसे ढेर कर दिया। एनकाउंटर मंगलवार तड़के 4 बजे हुआ।

केरल हाईकोर्ट से लाइबेरियाई जहाज की जब्ती का आदेश

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल हाईकोर्ट ने सोमवार को लाइबेरियाई जहाज एमएससी अकीकेता 2 को जब्त करने का आदेश दिया। यह शिप लाइबेरियाई जहाज रूस्ष्ट एल्सा 3 का सहयोगी था, जो 25 मई को कोच्चि के तट पर डूब गया था। दोनों जहाज एमएससी मेडिटेरेनियन शिपिंग कंपनी के हैं। एमएससी एल्सा 3 डूबने से हुए पर्यावरणीय और आर्थिक नुकसान पर केरल सरकार ने 9531 करोड़ रुपए के मुआवजे की याचिका लगाई थी। साथ ही सहयोगी जहाज के भारत से बाहर जाने की आशंका जताते हुए जहाज जब्त करने की मांग की थी।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय में साइबर और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस पर केंद्रित पाठ्यक्रम आरंभ किए जाएं: मुयमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार साइबर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर केंद्रित पाठ्यक्रम आरंभ किए जाएं साथ ही विश्वविद्यालय, मीडिया के क्षेत्र में एडवांस्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट के रूप में अपनी पहचान बनाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राज्य शासन द्वारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं के संप्रेषण और उनकी प्रभावशीलता के सर्वेक्षण संबंधी गतिविधियां भी विश्वविद्यालय में आरंभ करने की आवश्यकता बताई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में विश्वविद्यालय की महापरिषद की बैठक में यह निर्देश दिए। बैठक में उच्च शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार, इंदौर सांसद श्री शंकर लालवानी, विश्वविद्यालय के कुलगुरू श्री विजय मनोहर तिवारी, अपर मुख्य सचिव वित्त श्री मनीष रस्तोगी, सचिव एवं आयुक्त जनसम्पर्क डॉ. सुदाम खाड़े सहित महापरिषद के सदस्यगण उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विश्वविद्यालय के रीवा और खंडवा परिसरों में रोजगार परक पाठ्यक्रम संचालित करने संबंधी कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए। बैठक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत एक वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम आरंभ करने को स्वीकृति प्रदान की गई। स्वीकृति के बाद एम.ए. (जर्नलिज्म एंड क्रिएटिव एंड राइटिंग), एम.ए. (मास कम्युनिकेशन), एम.एससी (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) और एम.एसी.ए. के एक वर्षीय पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय द्वारा संचालित किए जाएंगे।

भाषा विवाद, राउत का भाजपा सांसद पर पलटवार

मुंबई (एजेंसी)। शिवसेना (उद्धव गुट) नेता संजय राउत ने कहा कि भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के पास तो फर्जी डिग्री है। ऐसे इंसान को कोई हक नहीं कि वह हमें बताए कि क्या करना चाहिए। उन्होंने कहा- हमें हिंदी भाषी लोगों से कोई परेशानी नहीं है। शिवसेना ने कभी उन पर हमला नहीं किया। राउत ने कहा- सबसे पहले तो ये दुबे हैं कौन? मैं महाराष्ट्र के हिंदी भाषी नेताओं से अपील करता हूं कि वे दुबे के बयान की निंदा करें। तभी मैं मानूंगा कि आप महाराष्ट्र से हैं।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के पिता का निधन

जोधपुर (एजेंसी)। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के पिता दाऊलाल वैष्णव का मंगलवार सुबह निधन हो गया। वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे और हाल ही में उनकी तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें जोधपुर एम्स अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

जोधपुर एम्स के मुताबिक मंगलवार सुबह 11 बजकर 52 मिनट पर उन्होंने अंतिम सांस ली।

वे मूलतयः पाली जिले के जीवंद कला निवासी थे और बाद में परिवार के साथ जोधपुर में बस गए थे। रातानाडा भास्कर चौराहा के पास महावीर कॉलोनी में उनका घर है। अपने गांव में वे सरपंच भी रह चुके हैं और सामाजिक कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाते रहे। दाऊलाल वैष्णव ने जोधपुर में एक वकील और कर सलाहकार के रूप में लंबे समय तक कार्य किया। उनका अंतिम संस्कार आज दोपहर जोधपुर के कागा स्थित वैष्णव समाज के श्मशान घाट पर किया जाएगा। उनकी अंतिम यात्रा में परिवार, रिश्तेदार, समाज के गणमान्य लोग और कई राजनीतिक व प्रशासनिक हस्तियां शामिल होंगी। उनके परिवार में पत्नी सरस्वती वैष्णव, बड़े बेटे अश्विनी वैष्णव और छोटे बेटे आनंद वैष्णव हैं।

रेल मंत्री बनने के बाद 2 अक्टूबर 2021 को पहली बार अश्विनी वैष्णव जोधपुर पहुंचे थे। इस दौरान पिता-पुत्र की मुलाकात काफी कम समय के लिए हो पाई थी, तब दाऊलाल वैष्णव ने अश्विनी वैष्णव को एक चिट्ठी लिखी।

बिहार में सरकारी नौकरी में डोमिसाइल पॉलिसी लागू

पटना (एजेंसी)। बिहार सरकार ने महिलाओं के लिए डोमिसाइल पॉलिसी लागू कर दी है। अब सरकारी नौकरियों में महिलाओं को इसका फायदा मिलेगा। बिहार की बाहर की महिलाओं को जनरल कैटेगरी में जोड़ा जाएगा। पहले दूसरे राज्यों की महिलाओं को भी 35त्न आरक्षण का लाभ मिलता था। अब सिर्फ बिहार की महिलाओं को फायदा मिलेगा। नीतीश कैबिनेट की बैठक में मंगलवार को ये फैसला लिया गया। इसके साथ ही 43 एजेंडों पर मुहर लगी है। बिहार में पहली बार बिहार युवा आयोग का गठन होगा। चुनावी साल में

बिहार युवा आयोग के गठन का निर्णय नीतीश सरकार ने लिया है। दरअसल, नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी ने कहा था कि सरकार बनने पर वह युवा आयोग का गठन करेंगे।

जनगणना पहली बार डिजिटल प्लेटफॉर्म से भी होगी

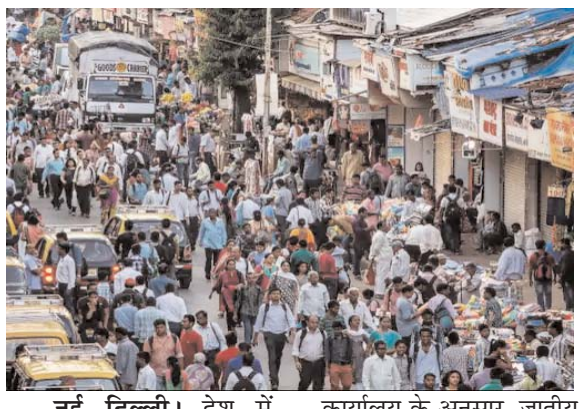

नई दिल्ली। देश में 2027 में होने वाली 16वीं जनगणना ऑनलाइन होगी। जनगणना महापंजीयक कार्यालय के अनुसार, जातीय गिनती और जनगणना पहली बार डिजिटल प्लेटफार्म से होगी। इसके लिए विशेष वेब पोर्टल शुरू होगा। इस पर नागरिक खुद जानकारी भर सकते हैं। नतीजे भी पहले की 15 जनगणनाओं से कम समय में मिल जाएंगे। 16वीं जनगणना के आंकड़े केवल 9 महीने में आने की उम्मीद है। इसमें जातीय गणना भी शामिल होगी। पहले नतीजे आने में 18 महीने लगते थे। जनगणना महापंजीयक कार्यालय ने बताया, डिजिटल सेंसस से डेटा जुटाने और इसे सेंट्रल सर्वर तक सीधे भेजने में आसानी होगी। गिनती का काम मार्च 2027 तक पूरा होगा।

पीएम और आरएसएस का कार्टून बनाने वाले को जमानत नहीं

इंदौर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का विवादित कार्टून बनाने वाले हेमंत मालवीय की अग्रिम जमानत याचिका हाईकोर्ट ने मंगलवार को निरस्त कर दी है। जस्टिस सुभाष अभ्यंकर की बेंच ने माना कि यह मामला अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमा लांघने का है। आरोपी कार्टूनिस्ट से कस्टोडियल पूछताछ जरूरी है। कार्टूनिस्ट की ओर से दलील दी गई कि यह एक हास्य-व्यंग्य था। सिर्फ उनके फेसबुक पेज पर साझा किया गया, लेकिन कोर्ट ने माना कि इस तरह के कार्टून सार्वजनिक सद्भाव को बिगाड़ सकते हैं। धारा 41(1)सीआरपीसी के तहत गिरफ्तारी उचित मानी जा सकती है। सुप्रीम कोर्ट के अर्नेश कुमार फैसले का लाभ भी कोर्ट ने अस्वीकार कर दिया। मालवीय ने प्रधानमंत्री मोदी और आरएसएस को लेकर आपत्तिजनक कार्टून फेसबुक पर शेयर किया था।

पंजाब के सभी लोगों को 10 लाख तक मुफ्त इलाज

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान और आम आदमी पार्टी के सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल ने मंगलवार को चंडीगढ़ में मुख्यमंत्री सेहत बीमा योजना लॉन्च की। इस योजना के तहत पंजाब के हर व्यक्ति के सेहत कार्ड बनाए जाएंगे। सेहत कार्ड से उन्हें 10 लाख रुपए तक का मुफ्त इलाज मिलेगा। 2 अक्टूबर से कार्ड बनने शुरू हो जाएंगे।मुख्यमंत्री भगवंत मान ने कहा कि इस योजना में बड़े-बड़े अस्पताल शामिल हैं। लोगों को चिंता करने की जरूरत नहीं है। लोग पहले नीले-पीले कार्डों के चक्कर में फंसे रहते थे। अब सेहत कार्ड के जरिए हमने तय किया है कि जो पंजाब का निवासी होगा, उसे हर हाल में इलाज मिलेगा। पंजाब में पहले से ही मुख्यमंत्री सरबत सेहत बीमा योजना चल रही है, जिसके तहत सरकारी और पैनल वाले अस्पतालों में 5 लाख तक का मुफ्त इलाज मिलता है। इस योजना में राज्य के 80 प्रतिशत लोग कवर होते हैं। इसके अलावा, आयुष्मान भारत योजना केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही है, जो पूरे भारत में गरीबी रेखा से नीचे के लोगों को सरकारी और सूचीबद्ध अस्पतालों में 5 लाख तक के इलाज की सुविधा देती है। यह योजना सभी राज्यों में लागू है, लेकिन इसमें राज्य सरकार की भागीदारी जरूरी है।

अब पंजाब सरकार जो नई योजना लेकर आई है, उसका फायदा सभी आयु वर्ग के लोग उठा पाएंगे। इस योजना में कोई ऐसी शर्त नहीं है कि केवल इतने प्रतिशत लोगों को ही इसका लाभ मिलेगा, बल्कि इसके लिए सिर्फ पंजाब का निवासी होना जरूरी है।

कांवड़ रूट पर शराब की दुकानें ढकी जाएंगी

मेरठ (एजेंसी)। 11 जुलाई से कांवड़ यात्रा शुरू होगी। मेरठ में इसको लेकर आज 4 राज्यों यूपी, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखंड के अफसरों की बैठक चल रही है। 4 करोड़ कांवड़िए हरिद्वार और गोमुख से जल उठाएंगे। ये यूपी, हरियाणा, दिल्ली से हरिद्वार पहुंचते हैं। यूपी डीजीपी राजीव कृष्ण ने बताया- 11 जुलाई से पूरे कांवड़ रूट की शराब की दुकानों को ढका जाएगा। दुकानें खुलेंगी, लेकिन पर्दे से ढकी रहेंगी। पूरे कांवड़ रूट की ड्रोन से निगरानी होगी। ट्रैफिक पुलिस ने नया प्लान पेश किया। 10 जुलाई की रात से यह लागू हो जाएगा। भारी वाहनों का प्रवेश शहर में नहीं होगा। शहर में एक लेन में कांवड़िए और दूसरी लेन में छोटे वाहन चलेंगे। मेरठ कमिश्नर कार्यालय में ये मीटिंग चल रही।

छांगुर बाबा की 3 करोड़ की कोठी पर चला बुलडोजर

लरामपुर (एजेंसी)। यूपी में धर्मांतरण के मास्टरमाइंड जमालुद्दीन उर्फ छांगुर बाबा पर मंगलवार को बड़ी कार्रवाई हुई। बलरामपुर में 40 कमरों वाली उसकी आलीशान कोठी पर 9 बुलडोजर चलाए गए। शाम 5 बजे तक कोठी के 20 कमरे और 40 फीट लंबे और इतने ही चौड़े हॉल को ढहा दिया गया। अब बुधवार सुबह 10 बजे फिर से कमरे तोड़े जाएंगे। कोठी में 70 से ज्यादा

कमरे और हॉल हैं। इनमें 40 कमरों वाले हिस्से को अवैध बताया गया है। एटीएस का दावा है, छांगुर बाबा यहीं से धर्मांतरण का नेटवर्क चलाता था। हालांकि यह कोठी उसकी महिला मित्र नीतू उर्फ नसरीन के नाम पर है। बाबा ने ही नीतू का धर्मांतरण करके उसे नसरीन नाम दिया था। योगी ने कहा, आरोपी जलालउद्दीन की गतिविधियां समाज विरोधी ही नहीं, बल्कि राष्ट्र विरोधी भी हैं।

अमरनाथ यात्रा- 5वें दिन 24 हजार श्रद्धालुओं ने दर्शन किए

पहलगाम (एजेंसी)। अमरनाथ यात्रा के पांचवें दिन 23,857 श्रद्धालुओं ने पवित्र गुफा में हिम शिवलिंग के दर्शन किए। अब तक एक दिन दर्शन करने वालों की यह सबसे बड़ी संख्या है। यात्रा के पहले दिन गुरुवार को 12,348 , शुक्रवार को 14,515, शनिवार को 21,109, रविवार को 21,512 तीर्थयात्री दर्शन के लिए पहुंचे थे।

पवित्र अमरनाथ यात्रा 3 जुलाई को शुरू हुई थी। पहले 5 दिन में ही दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं की संख्या 93,336 पहुंच गई है। इस बीच 8,605 यात्रियों का छठा जत्था सोमवार को जम्मू से गांदरबल के बालटाल और पहलगाम के नुनवान बेस कैंप के लिए रवाना हुआ। 38 दिन तक चलने वाली यात्रा पहलगाम और बालटाल दोनों रूटों से होगी। यात्रा का समापन 9 अगस्त को रक्षाबंधन के दिन होगा।

मतगणना और निर्वाचन परिणामों की घोषणा 10 जुलाई को

भोपाल (एजेंसी)। आठ नगरीय निकायों में आज एक-एक पार्षद के उप निर्वाचन के लिये मतदान संपन्न हुआ। शाम 5 बजे तक प्राप्त जानकारी के अनुसार कुल 69.68 प्रतिशत मतदाताओं ने मतदान किया। इसमें 73.01 प्रतिशत पुरूष और 66.36 प्रतिशत महिला मतदाता हैं। मतगणना और निर्वाचन परिणामों की घोषणा 10 जुलाई को सुबह 9 बजे से होगी। सचिव राज्य निर्वाचन आयोग श्री अभिषेक सिंह ने जानकारी दी है कि भोपाल जिले के नगर पालिका परिषद बैरसिया के वार्ड 7 में 65.8, नगरपालिका परिषद सिवनी के वार्ड 11 में 57.1, इंदौर जिले के नगर परिषद सांवेर के वार्ड 7 में 77.2 और गौतमपुरा के वार्ड 15 में 85.9, मंडला जिले के बिछिया के वार्ड 13 में 80.4, शहडोल जिले के खांड के वार्ड 8 में 63.5, छिंदवाड़ा जिले के न्यूटन चिखली के वार्ड 4 में 82.6 और खरगोन जिले के नगरपरिषद भीकनगाँव के वार्ड 5 में 68.1 प्रतिशत मतदान हुआ। पन्ना जिले के ककरहटी के वार्ड 13 में निर्विरोध निर्वाचन हुआ है।

मंत्री श्री कुशवाहा नई दिल्ली में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की बैठक में हुए शामिल

भोपाल (एजेंसी)। उद्यानिकी एवं खाद्य प्र-संस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाहा सोमवार को नई दिल्ली में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की 96वीं आमसभा बैठक में सम्मिलित हुए। भारत रत्न सी. सुब्रमण्यम ऑडिटोरियम एम.ए.एस.सी. कॉम्पलेक्स के सभागार में आमसभा की अध्यक्षता केंद्रीय कृषि एवं कृषक कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने की। मंत्री श्री कुशवाहा ने कहा कि प्रदेश को उद्यानिकी राज्य में विकसित करने के लिये सरकार दृढ़ संकल्पित है। मध्यप्रदेश का मसालों के उत्पादन में देश में प्रथम स्थान है। उन्होंने कहा कि इसको दृष्टिगत रखते हुये भारत कृषि अनुसंधान परिषद का प्रदेश में अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया जाये। इससे प्रदेश के कृषकों को मसाला फसलों की उन्नत प्रजातियां सुलभ एवं उचित दाम पर उपलब्ध हो सकेंगी और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मसाला उत्पादन को प्रोत्साहन मिलेगा। कृषकों की आय में वृद्धि, उद्यानिकी उत्पाद के मूल्य संवर्धन से प्र-संस्करण उद्योग को बढ़ावा, प्रदेश एवं देश के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय के अध्ययन में सुविधायें प्राप्त होगी तथा प्रदेश के उद्यानिकी उत्पाद को निर्यात प्रोत्साहन मिलेगा। मंत्री श्री कुशवाहा ने कहा कि सब्जियों की संकर किस्मों के बीज बाजार में अधिक कीमतों में उपलब्ध हो पाते है। भारतीय कृषि अनुसंधान द्वारा उत्पादित संकर सब्जी बीजों को प्रदेश के कृषकों को सुलभ एवं उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिये प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर बीज उत्पादन का कार्यक्रम अभियान के रूप में चलाया जाए। इससे कम लागत और कम समय में किसान बेहतर उत्पादन कर सकेंगे। आम सभा की बैठक में अनुसंधान परिषद के कार्यों का लेखा-जोखा तथा भविष्य की योजनाओं पर भी चर्चा की गई।

महाविद्यालयों में स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश के लिए तिथि में की गई वृद्धि

भोपाल (एजेंसी)। उच्च शिक्षा विभाग ने सत्र 2025-26 में, महाविद्यालयों में स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश के लिए तिथि में वृद्धि की है। माननीय उच्च न्यायालय के आदेश के परिपालन में, उच्च शिक्षा विभाग द्वारा स्नातकोत्तर स्तर सत्र 2025-26 में ऑनलाइन प्रवेश अंतर्गत सीएलसी चरण के लिए अद्यतन समय सारणी जारी की गई है। जारी समय सारणी के अनुसार, सत्र 2025-26 में स्नातकोत्तर कक्षाओं में मेजर माइनर विषयों में एवं मेजर एवं माइनर विषय के अतिरिक्त अन्य विषय में प्रवेश लेने के इच्छुक विद्यार्थी, 7 से 10 जुलाई तक ऑनलाइन पंजीयन/आवेदन कर सकेंगे।

मंत्री सारंग ने किया नरेला विधानसभा के तीन वार्डों में विभिन्न विकास कार्यों का भूमि-पूजन

भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने सोमवार को नरेला विधानसभा अंतर्गत वार्ड 75, 70 एवं 69 में विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन किया। बारिश की तेज़ बौछारों के बीच कार्यक्रम समय पर आरंभ हुआ। बड़ी संख्या में उपस्थित नागरिकों के उत्साह ने यह सिद्ध कर दिया कि नरेला के नागरिक विकास के प्रति कितने जागरूक और प्रतिबद्ध हैं। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में विकास, सुशासन और गरीब कल्याण के नित नए आयाम स्थापित कर रही है। विकास, लोक-कल्याण, गरीब कल्याण, सुरक्षा और समृद्धि के साथ विरासत का सम्मान के प्रति सरकार कटिबद्ध है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के हर नागरिक से किया गया हर वादा प्राथमिकता के साथ पूरा

किया जा रहा है। नरेला के हर घर में नर्मदा जल, सीएम राइज स्कूल, शासकीय कॉलेज, थीम आधारित आधुनिक पार्क, फ्लाईओवर, स्मार्ट सड़कों का नेटवर्क और आदर्श ड्रेनेज सिस्टम जैसी अधोसंरचनाएं क्षेत्र की तस्वीर बदल रही हैं। उन्होंने कहा कि नरेला के रहवासियों को सुविधाजनक, सुरक्षित और समृद्ध जीवन मिले यही हमारा संकल्प है। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक सहित बड़ी संख्या में रहवासी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान तेज़ बारिश के बावजूद न तो रहवासियों की उपस्थिति कम हुई और न ही उनका उत्साह। लोग बारिश में भीगते हुए भी मंत्री श्री सारंग का उद्बोधन सुनते रहे। नरेला विधानसभा अंतर्गत वार्ड 75 के बजरंग कॉलोनी छेहगरा व कृषक नगर में नवीन सीसी सड़क निर्माण एवं वार्ड 70 के बिजली नगर कॉलोनी में पार्क का विकास, पुलिया निर्माण, सांस्कृतिक मंच निर्माण, सी.सी बेंच निर्माण व सीवेज पाइपलाइन का निर्माण तथा वार्ड 69 के ओल्ड सुभाष नगर में नाली निर्माण व लाला लाजपत राय कॉलोनी में पेवर ब्लॉक निर्माण की रहवासियों को सौगात मिली है।

मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉन्क्लेव 11 जुलाई को इंदौर में

भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में रीयल एस्टेट की गतिविधियों के विस्तार के लिये नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा 11 जुलाई को इंदौर के ब्रिलिएंट कन्वेंशन सेंटर में मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉन्क्लेव का आयोजन किया जा रहा है। नेक?स्ट होराइजन- बिल्डिंग सिटीज़ ऑफ टुमारो थीम पर आधारित यह कॉन्क्लेव राज्य के शहरी विकास और निवेश के लिये नए क्षितिज खोलने का माध्यम बनेगा। %उद्योग एवं रोजगार वर्ष 2025% के अंतर्गत इस आयोजन का उद्देश्य प्रदेश की नगरीय अधोसंरचना को भविष्योन्मुखी बनाना, सतत विकास को गति देना और व्यापक निवेश आकर्षित करना है। मध्यप्रदेश देश के केन्द्र में रणनीतिक भौगोलिक स्थिति के कारण महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसलिये यहां से आसानी से देश भर से लॉजिस्टिक संपर्क किया जा सकता है। प्रदेश में तेज गति से होता शहरीकरण, विशेष रूप से टियर-2 और टियर-3 इंदौर, भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर और उज्जैन जैसे शहरों में सशक्त इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित हो रहा है। राज्य में सस्ती भूमि और श्रम, सरल प्रशासनिक प्रक्रियाएं हैं और उद्योगों के लिए अनुकूल नीतियाँ लागू की गई हैं। मध्यप्रदेश में केन्द सरकार की प्रधानमंत्री गति-शक्ति, अमृत 2.0 और स्मार्ट-सिटी जैसी योजनाओं से प्रदेश में समावेशी विकास हो रहा है।

प्रदेश में विकास और निवेश शहरी परिवहन (मेट्रो, ई-बस, मल्टीमॉडल हब), किफायती आवास, स्लम पुनर्विकास, ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन, जलापूर्ति, सीवेज नेटवर्क, झील संरक्षण, डिजिटलीकरण, ई-गवर्नेंस, भवन स्वीकृति प्रणाली और स्वच्छ ऊर्जा, हरित भवन, रिन्यूएबल इनफ्रास्ट्रक्चर विकसित किया जा रहा है। निवेशक इन क्षेत्रों में निवेश कर भविष्य में होने वाले लाभ के सहभागी हो सकते हैं। मध्यप्रदेश के भोपाल और इंदौर में मेट्रो रेल परियोजना, स्मार्ट सिटी के तहत इंटिग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर्स, इंडस्ट्रियल टॉउनशिप्स, न्यू टॉउन डेवलपमेंट प्लान, नगरीय निकायों में आधुनिक वेस्ट प्रोसेसिंग यूनिट्स और स्ट्रीट वेंडिंग जोन, शहरी स्वास्थ्य केन्द्रों का सुदृढ़ीकरण जैसी परियोजनाएं चल रही हैं और कुछ भविष्य के लिए प्रस्तावित हैं। मध्यप्रदेश उद्योग विकास निगम उद्योगों को वन-स्टॉप सुविधा उपलब्ध करा रहा है।

सांदीपनि विद्यालयों में यूनिसेफ के सहयोग से चलेगा कॅरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम

भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश के सांदीपनि विद्यालयों में पढ़ने वाले कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों का करियर मार्गदर्शन यूनिसेफ के सहयोग से दिया जायेगा। कॅरियर रिफ्रेशर प्रशिक्षण के द्वारा प्रत्येक विद्यालय के एक नोडल शिक्षक को संसाधनों को उपयोग करने के लिये सक्षम बनाया जा रहा है। नोडल शिक्षक के माध्यम से ही विद्यालय में कॅरियर मार्गदर्शन प्रदान करने वाली गतिविधियां संचालित की जायेंगी। कॅरियर मार्गदर्शन के संबंध में स्कूल शिक्षा विभाग के आयुक्त लोक शिक्षण कार्यालय ने प्रदेश के समस्त सांदीपनि विद्यालय के प्राचार्यों को पत्र लिखकर दिशा-निर्देश जारी किये हैं। नोडल शिक्षक एवं कक्षा शिक्षक की सहायता से सभी विद्यार्थियों से कॅरियर इनफॉर्मेशन डायरी और कॅरियर फोल्डर तैयार कराया जायेगा, जिसमें हर माह की कॅरियर संबंधी जानकारी संधारित कराई जायेगी। कॅरियर गतिविधियों का संचालन राज्य स्तर से जारी कॅरियर कैलेंडर के अनुसार विद्यालयों में नियमित रूप से संचालित कराया जायेगा। निर्देश में यह भी कहा गया है कि विद्यालय समय सारणी में विद्यार्थियों के कॅरियर मार्गदर्शन के लिये कम से कम 2 पीरियड प्रति माह आवंटित किये जायें। विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों की संख्या के अनुसार कॅरियर नोडल शिक्षक एवं सहयोगी शिक्षकों के माध्यम से कॅरियर मार्गदर्शन सत्रों की योजना बनाकर सुव्यवस्थित संचालन करवाया जाये। कॅरियर गाइडेंस में प्रशिक्षित नोडल शिक्षक के माध्यम से विद्यालय के कक्षा 9 से 12 तक अध्यापन कराने वाले अन्य 2 शिक्षकों को भी शाला स्तर पर प्रशिक्षित करके उनका सहयोग लिया जाये। विद्यालय में प्रार्थना सभा में कॅरियर गाइडेंस के तहत किसी एक डोमेन से संबंधित एक या दो कॅरियर कार्ड की संक्षिप्त जानकारी सप्ताह में किन्हीं 3 दिनों में साझा की जा सकती है। इस प्रक्रिया से विद्यार्थी कॅरियर के प्रति रूचि लेकर स्वयं कार्ड पढ़कर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेगा। निर्देश में कहा गया है कि प्रत्येक सांदीपनि विद्यालय में एक कॅरियर कार्नर बनाया जाये जिसमें कॅरियर संबंधी सामग्री, कॅरियर कार्ड, पोस्टर, ब्रोशर और विद्यार्थी द्वारा बनाई गई सामग्री प्रदर्शित की जाये।

प्रदेश में पहली बार पौधरोपण के लिए अत्याधुनिक तकनीक का किया जाएगा उपयोग

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश की स्व-सहायता समूह की महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिये प्रदेश सरकार द्वारा महात्मा गांधी नरेगा अंतर्गत एक बगिया मां के नाम परियोजना शुरू की गई है। इसके अंतर्गत स्व-सहायता समूह की महिलाओं की निजी भूमि पर फलोद्यान की बगिया विकसित की जाएगी। प्रदेश में ऐसा पहली बार होगा जब अत्याधुनिक तरीके पौधरोपण का कार्य किया जाएगा। ऐप के माध्यम से हितग्राहियों का चयन किया जाएगा। परियोजना के क्रियान्वयन को लेकर मनरेगा परिषद ने तैयारी शुरू कर दी है। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा इस संबंध में निर्देश भी जारी किए गए हैं। एक बगिया मां के नाम परियोजना का लाभ लेने वाली आजीविका मिशन के स्व-सहायता समूह की महिला का चयन एक बगिया मां के नाम ऐप से किया

जाएगा। मनरेगा परिषद द्वारा मध्यप्रदेश राज्य इलेक्ट्रॉनिक्स विकास निगम लिमिटेड के माध्यम से ऐप का निर्माण किया गया है। अन्य किसी माध्यम से हितग्राही का चयन नहीं किया जाएगा। चयनित महिला हितग्राही के नाम पर भूमि नहीं होने की दशा में उस महिला के पति, पिता, ससुर और पुत्र की भूमि पर सहमति के आधार पर पौधरोपण किया जाएगा। एक बगिया माँ के नाम'' परियोजना अंतर्गत प्रदेश की 30 हजार से अधिक स्व-सहायता समूह की महिलाओं को लाभ मिलेगा। इनकी निजी जमीन पर 30 लाख से अधिक फलदार पौधे लगाएं जाएंगे, जो समूह की महिलाओं की आर्थिक तरक्की का आधार बनेंगे।

जल, भूमि संरक्षण के लिये ठोस प्रयास आवश्यक : मंत्री पटेल

भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास एवं श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा है कि हमें जल, भूमि संरक्षण के लिये अभी से ठोस प्रयास करने होंगे। जल स्रोतों के रिचार्जिंग सिस्टम को बढ़ाना होगा।

फसलों का चक्रीकरण और पौधरोपण में वैज्ञानिक तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा देना होगा। मंत्री श्री पटेल सोमवार को राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन की साधारण सभा की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बैठक में चिंता करते हुए कहा कि बढ़ती जनसंख्या के कारण जल स्रोतों के रिचार्जिंग सिस्टम

धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। नदियों के उद्गम स्थलों का संरक्षण नहीं करने के कारण उनके स्रोत सूखते जा रहे हैं। मरूस्थलीकरण की प्रक्रिया तेजी से बढ़ रही है। इस अवसर पर पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्रीमती राधा सिंह, प्रमुख सचिव श्रीमती दीपाली रस्तोगी, प्रमुख सचिव पीएचई श्री पी. नरहरि सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित थे। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि राजीव गांधी जल संग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन के अंतर्गत विभिन्न विभागों से मिशन के परिणामों की जानकारी प्राप्त की जाए। उन्होंने कहा कि मिशन के तहत सभी परियोजनाओं का थीमेटिव विश्लेषण किया जाये। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि वॉटर शेड परियोजनाओं के बेहतर परिणामों के लिये एनजीओ को संबद्ध करने की नीति तैयार की जाये। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना की प्रगति का आंकलन जमीनी स्तर पर करें। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि वॉटर शेड परियोजनाओं के अंतर्गत क्लस्टर आधारित सब्जी उत्पादन का कार्य अच्छा करने वाले जिलों का स्वयं भ्रमण करेंगे।

मुख्य अभियंताओं की टीम ने प्रदेश के सात जिलों में निर्माण कार्यों का किया औचक निरीक्षण

भोपाल (एजेंसी)। लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रदेश में निर्माण कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु एक व्यापक कार्ययोजना के अंतर्गत 5 जुलाई 2025 को सात मुख्य अभियंताओं की टीमों ने हरदा, जबलपुर, गुना, खंडवा, सतना, शाजापुर एवं निवाड़ी जिलों में औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के लिए कुल 34 निर्माण कार्यों को रैंडम आधार पर चयनित किया गया। इनमें 14 कार्य लोक निर्माण विभाग (सड़क/पुल), 11 कार्य पी.आई.यू. (भवन), 6 कार्य मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम, 2 कार्य म.प्र. भवन विकास निगम तथा 1 कार्य राष्ट्रीय राजमार्ग का शामिल था। निरीक्षण के बाद प्रतिवेदन की समीक्षा श्री आर.के. मेहरा, तकनीकी सलाहकार, म.प्र. सड़क विकास निगम की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से की गई। बैठक में प्रमुख अभियंता श्री के.पी.एस. राणा, प्रमुख अभियंता (भवन) श्री एस.आर. बघेल, श्री अनिल श्रीवास्तव, मुख्य अभियंता श्री ए.आर. सिंह सहित अधीक्षण यंत्री, कार्यपालन यंत्री एवं निरीक्षणकर्ता अधिकारी उपस्थित रहे। निरीक्षण प्रतिवेदनों के अनुसार जबलपुर जिले के अमझर-लोहकारी-पढवार मार्ग (परफॉर्मेंस गारंटी अंतर्गत) का कार्य उत्कृष्ट पाया गया, जिसके लिए कार्यपालन यंत्री श्री शिवेन्द्र सिंह, अनुविभागीय अधिकारी श्री अतुल चौकसे एवं ठेकेदार मेसर्स अतुल खरे की सराहना की गई। इसी प्रकार, खंडवा जिले में सीएम राइज स्कूल भवन तथा निवाड़ी जिले में सीएमएचओ कार्यालय एवं 100 बिस्तरीय अस्पताल भवन का निर्माण कार्य भी संतोषजनक पाया गया। रीवा संभाग में रीवा-बनकुईया-सेमरिया मार्ग का कार्य अच्छा पाया गया।

आशापुर-हरदा मार्ग पर पेच रिपेयर कार्य प्रगति पर है, जिसे शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। सीधी-सिंगरौली मार्ग पर आवश्यक सुधार कार्य प्रारंभ हैं। जबलपुर-नरसिंहपुर-पिपरिया मार्ग पर भी पेच रिपेयर की आवश्यकता बताई गई है, जिसे लेकर संभागीय प्रबंधक को निर्देशित किया गया है। समीक्षा में यह भी निर्देशित किया गया कि समस्त भवनों के एक्सपेंशन जॉइंट्स का संधारण कार्य प्राथमिकता से कराया जाए, जिसके लिए प्रमुख अभियंता (भवन) को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी करने के लिए कहा गया। सतना जिले के छिंदा-शिवपुर-सेमरी मार्ग पर निर्माणाधीन पुल की फिनिशिंग कार्य में कमियां पाई गईं। इसके लिए संबंधित कार्यपालन यंत्री को स्पष्टीकरण पत्र जारी करने हेतु निर्देश दिए गए। सभी अभियंताओं को निर्देशित किया गया कि वे औचक निरीक्षण अथवा अन्य अवसरों पर सड़कों की स्थिति, पॉटहोल्स या अन्य आवश्यक सुधार कार्यों से संबंधित जानकारी लोकपथ मोबाइल ऐप में अनिवार्य रूप से दर्ज करें, जिससे समयबद्ध कार्यवाही सुनिश्चित हो सके।

भोपाल सहित पूरे कंपनी कार्यक्षेत्र में अब तक 3 लाख से अधिक स्मार्ट मीटर स्थापित

भोपाल (एजेंसी)। केन्द्र सरकार की रिवेम्प्ड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम (आरडीएसएस) योजना के अंतर्गत मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा कंपनी कार्यक्षेत्र में स्मार्ट मीटर लगाने का काम त्वरित गति से चल रहा है। जहां स्मार्ट मीटर लगाए जा चुके हैं, वहां पर समय पर बिलिंग तथा रीडिंग हो रही है तथा दिन के टैरिफ में 20 प्रतिशत की छूट भी मिलनी शुरू हो गई है।

कंपनी कार्यक्षेत्र के भोपाल, नर्मदापुरम, ग्वालियर एवं चंबल संभाग के 16 जिलों में अब तक 3 लाख, 3 हजार 305 स्मार्ट मीटर स्थापित किए जा चुके हैं। इनमें सर्वाधिक भोपाल शहर वृत्त में एक लाख, 62 हजार 320 स्मार्ट मीटर स्थापित किए जा चुके हैं कंपनी ने कहा है कि स्मार्ट मीटर लगने से उपभोक्ताओं को बेहतर सेवाएं, सटीक बिलिंग और ऊर्जा दक्षता में सुधार हो रहा है। स्मार्ट मीटर लगाने का काम समय सीमा में पूर्ण करने के लिए कंपनी की टीमें लगातार कार्य में जुटी हुई हैं। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने स्मार्ट मीटर के फायदे बताते हुए कहा है कि स्मार्ट मीटर से रियल टाइम डेटा प्राप्त किया जा सकता है, जिससे उपभोक्ताओं को सटीक और समय पर बिलिंग सुनिश्चित की जा रही है। कंपनी ने बताया कि जहां-जहां भी स्मार्ट मीटर स्थापित किए जा चुके हैं वहां पर बिलिंग तथा रीडिंग निर्धारित समय पर हो रही है, इससे सभी उपभोक्ता संतुष्ट हैं। नए टैरिफ आर्डर के अनुसार स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को अब खपत के आधार पर दिन के टैरिफ में 20 प्रतिशत की छूट भी दी जा रही है। जून माह का बिल जो कि जुलाई माह में जारी हुआ है, उसमें दिन के टैरिफ में सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक उपयोग की गई विद्युत के दौरान बनी यूनिट पर छूट अलग कॉलम में अंकित की गई है।

आबकारी के रिटायर्ड उपायुक्त को 4 साल की सजा

भोपाल (एजेंसी)। न्यायालय ने आबकारी विभाग के रिटायर्ड आबकारी उपायुक्त विनोद रघुवंशी को 4 साल की सजा सुनाई है। अन्य आरोपी आबकारी विभाग के रिटायर्ड क्लर्क ओपी शर्मा को 2 साल की सजा सुनाई है। केस में फरियादी अजय अरोरा ने आरोपियों को? खिलाफ प्राइवेट कंप्लेंट दायर की थी। 5 मार्च 2002 को अजय अरोरा ने अशोक ट्रेडर्स फर्म में हिस्सेदारी ली थी और पार्टनरशिप डीड तैयार हुई थी। वह 18 प्रतिशत के हिस्सेदार थे। 6 मार्च 2022 को फर्म ने आबकारी के ठेके की ?नीलामी में हिस्सा लिया। आबकारी ने ठेके की नीलामी स्वीकार कर फर्म को ठेका आवंटित कर दिया। इससे फर्म को शराब के व्यवसाय का लाइसेंस मिल गया। लेकिन, आरोपी विनोद रघुवंशी और ओपी शर्मा ने धोखाधड़ी कर 6 मार्च 2003 की नकली पार्टनरशिप डीड तैयार कर दी और अजय अरोरा को फर्म की हिस्सेदारी से बाहर कर दिया। आरोपियों ने फर्म के अन्य पार्टनर को फायदा पहुंचाने के? लिए 6 मार्च से 11 मार्च 2003 के बीच भोपाल आबकारी कार्यालय के रिकॉर्ड में अजय का नाम हटाकर नकली पार्टनरशिप डीड लगा दी थी।

आईएमए ने जीवनसाथी का सम्मान कर अनूठे अंदाज में मनाया डॉक्टर्स डे

'जीवनसंगिनी के समर्पण भाव के बिना चिकित्सा सेवा असंभव'

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना आईएमए ने जीवनसाथी का सम्मान कर अनूठे अंदाज में मनाया डॉक्टर्स डेसतना में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) ने इस बार डॉक्टर्स डे पर नवाचार करते हुए वरिष्ठ डॉक्टर्स की गृहणियों को सम्मानित कर एक ऐतिहासिक पहल की। आईएमए अध्यक्ष डॉ. राकेश अग्रवाल ने बताया कि डॉक्टर्स को अक्सर उनकी चिकित्सीय सेवाओं के लिए सम्मान मिलता है, लेकिन उनकी जीवनसंगिनी के समर्पण को पहचानना भी जरूरी है। उन्होंने कहा, "डॉक्टर्स की व्यस्तता के कारण परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी उनकी पत्नियों पर होती है। उनके समर्पण के बिना चिकित्सा सेवा असंभव है।"कार्यक्रम की शुरुआत मनीषा श्रीवास्तव, क्रांति तोमर और सुधा प्रजापति के गणेश वंदना गीत से हुई।

मुख्य अतिथि डॉ. एल.के. तिवारी, ब्रिगेडियर डॉ. देवेंद्र सिंह, डॉ. राकेश अग्रवाल, डॉ. हरकिरण बावा, डॉ. सतेंद्र सिंह, विमला चतुर्वेदी और सचिव डॉ. अलोक खन्ना ने पूजन किया। डॉ. सारिका कालरा और डॉ. विजेता राजपूत ने मंच संचालन शुरू किया। ब्रिगेडियर डॉ. देवेंद्र सिंह, डॉ. हरकिरण बावा, विमला चतुर्वेदी और डॉ. सतेंद्र सिंह को डॉ. ललित गुप्ता, डॉ. सारिका कालरा, डॉ. विपिन दुबे और डॉ. अलोक खन्ना ने सम्मानित किया।डॉ. देवेंद्र सिंह ने कहा कि चिकित्सा सेवा में आध्यात्मिक जुड़ाव जरूरी है। सचिव डॉ. अलोक खन्ना ने बताया कि आयोजन का संचालन मुख्य रूप से डॉक्टर्स की जीवनसंगिनियों - आभा अग्रवाल, संध्या गांधी, डॉ. प्रतिमा अग्रवाल, डॉ. श्रेया सराफ, रोली खन्ना, डॉ. प्रदीप्ति जैन, डॉ. रिंशू जैन, डॉ. वंदना मर्सकोले, डॉ. चांदनी अग्रवाल और प्रियंका प्रजापति ने किया।

मनोरंजन के लिए डॉ. रेखा पांडे, डॉ. प्रतिभा दुबे, डॉ. सुनीता गुप्ता, रंजना गौतम और रिंकू गुप्ता ने गेम्स का आयोजन किया।आयोजन के सफल संयोजन में डॉ. संकल्प जैन, डॉ. मुदित जैन, डॉ. संजीव प्रजापति और डॉ. सुदीप अग्रवाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही। सम्मान प्रक्रिया में मधु जायसवाल, कामिनी कारखुर, शोभा तिवारी, कमल, राजपाल, लक्ष्मी त्रिपाठी, डॉली अग्रवाल और छाया गुप्ता ने सहयोग दिया। सिटी पार्क के हॉल में सतना के डॉक्टर्स और उनके परिवारों की उपस्थिति में यह आयोजन यादगार रहा।

सम्मानित जीवनसाथी: सुधा अग्रवाल (डॉ. जे.पी. अग्रवाल), शशि पांडे (डॉ. हेमंत पांडे), ज्योत्सना अग्रवाल (डॉ. हरि अग्रवाल), संतोष गुप्ता (डॉ. मानिक चंद्र गुप्ता), ऊषा श्रीवास्तव (डॉ. अनिल श्रीवास्तव), नीता अग्रवाल (डॉ. ए.के. अग्रवाल), सुमन सिंह (डॉ. पुष्पेंद्र सिंह), सुधा गौतम (डॉ. डी.एन. गौतम), मधु वाधवानी (डॉ. एल.डी. वाधवानी), कुसुम जैन (डॉ. राजेश जैन), साधना सराफ (डॉ. अरविंद सराफ), संध्या नेमा (डॉ. नवल नेमा), राधा गुप्ता (डॉ. बी.डी. गुप्ता), विभा सिंह (डॉ. जी.पी. सिंह), अनिला पटेल (डॉ. बी.एल. पटेल), मंजू जैन (डॉ. संतोष जैन), मुमताज ताज़िर (डॉ. एम.ए. ताज़िर), ऊषा जैन (डॉ. राजकुमार जैन), ऊषा शर्मा (डॉ. नरेंद्र शर्मा), जगदीश त्रिपाठी (डॉ. रेखा त्रिपाठी)।

कमिश्नर ने आमजनता के आवेदनों में की जनसुनवाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय सभागार में कमिश्नर बीएस जामोद ने आमजनता के आवेदन पत्रों में सुनवाई की। कमिश्नर ने अधिकारियों को जनसुनवाई के आवेदन पत्रों में सात दिवस में कार्यवाही करके निराकरण करने के निर्देश दिए। जनसुनवाई में सरपंच ग्राम पंचायत मोहरवा द्वारा स्कूल की जमीन से अतिक्रमण हटाने तथा इसमें प्रस्तावित मंदिर निर्माण रूकवाने के लिए आवेदन दिया। कमिश्नर ने एसडीएम को मौके पर जाँच कर कार्यवाही के निर्देश दिए। आवेदिका सीताबाई नगर परिषद गोविंदगढ़ ने प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ देने के लिए आवेदन दिया। कमिश्नर ने संयुक्त संचालक नगरीय प्रशासन को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। जनसुनवाई में संतलाल साहू ने उनके नाती के कक्षा नवीं में शाला में प्रवेश के लिए आवेदन दिया। कमिश्नर ने संयुक्त संचालक शिक्षा को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। जनसुनवाई में श्री राघव प्रसाद, श्रीमती चन्द्रकली, दिनेश मिश्र, अखिलेश पटेल, दीपक कुमार सहित विभिन्न आवेदकों के आवेदनों में सुनवाई की गई। कमिश्नर ने ग्राम रौरा में शासकीय भूमि से बेदखल किए गए परिवारों के आवेदन पर संयुक्त कलेक्टर को जाँच कर प्रतिवेदन देने के निर्देश दिए। जनसुनवाई में सभी संभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

जनसुनवाई में 136 आवेदकों के आवेदनों में की गई सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आमजनता के आवेदन पत्रों के निराकरण के लिए जनसुनवाई का आयोजन किया गया। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर, अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी तथा डिप्टी कलेक्टर आरके सिन्हा ने आमजनता के 136 आवेदन पत्रों में सुनवाई की। मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने कहा कि सभी अधिकारी जनसुनवाई के आवेदन पत्रों का संवेदनशीलता से निराकरण करके सात दिवस में प्रतिवेदन प्रस्तुत करें। आवेदक को भी आवेदन पत्र में की गई कार्यवाही से अवगत कराएं। जनसुनवाई में गोलू बसदेवा निवासी नगर परिषद बैकुंठपुर ने प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ देने के लिए भूमि आवंटन का आवेदन दिया।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने नायब तहसीलदार बैकुंठपुर को प्रकरण में कार्यवाही के निर्देश दिए। शिवम मिश्रा निवासी ग्राम देवरी जिला सतना ने विन्ध्य टेलीलिंक्स लिमिटेड कंपनी में कार्यरत उनके पिता गोकरण प्रसाद मिश्रा की मृत्यु के बाद अनुकंपा नियुक्ति देने तथा अन्य हितलाभ प्रदान करने के लिए आवेदन दिया। मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने जिला श्रम पदाधिकारी को आवेदन का निराकरण करने के निर्देश दिए। मुन्नीलाल यादव निवासी ग्राम दुआरी ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के लिए आवेदन दिया। मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने तहसीलदार त्योंथर को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। जनसुनवाई में ग्राम पुरैना के 20 से अधिक निवासियों ने नलजल योजना का कार्य पूरा कराकर घरों में नल से पानी की आपूर्ति के लिए आवेदन दिया। मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने जिला प्रबंधक जल निगम को आवेदन के निराकरण के निर्देश दिए। जनसुनवाई में सभी संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

साक्षरता प्रभारी बनाने के दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों के तहत जिले के 15 वर्ष से अधिक आयु के निरक्षर व्यक्तियों को उल्लास नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के तहत साक्षर बनाया जा रहा है। इसके लिए शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में कक्षाएं संचालित की जाती हैं। नव साक्षरों के मूल्यांकन के लिए मूल्यांकन परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने महाविद्यालय, शिक्षा महाविद्यालय, डाइट तथा सभी हाईस्कूल एवं हायर सेकण्डरी स्कूल के प्राचार्यों को उनकी संस्था के एक शिक्षक को साक्षरता प्रभारी बनाने के निर्देश दिए हैं।

वृक्षारोपण के महाभियान में हर अधिकारी अनिवार्य रूप से भागीदारी निभाए - कमिश्नर

ई ऑफिस में ऑनबोर्ड न होने वाले कार्यालय प्रमुखों की रुकेगी वेतनवृद्धि - कमिश्नर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में कमिश्नर बीएस जामोद ने टीएल पत्रों तथा सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की। कमिश्नर ने कहा कि सभी अधिकारी सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों का संतुष्टिपूर्वक निराकरण करें। समाधान ऑनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं तथा 50 दिन से अधिक समय से लंबित सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों का प्राथमिकता से निराकरण करें। संभाग के सभी जिलों में एक पेड़ माँ के नाम अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत प्रत्येक विकासखण्ड में एक लाख पौधे रोपित करने का लक्ष्य रखा गया है। सभी अधिकारी वृक्षारोपण के महाभियान में अनिवार्य रूप से भागीदारी निभाएं। सभी शिक्षण संस्थाओं के परिसर, छात्रावास परिसर, आंगनवाड़ी केन्द्र भवन परिसर तथा कार्यालय परिसरों में उपयुक्त स्थल पर पौधे रोपित करें। जिले के सभी प्रमुख सड़कों के किनारे भी अनिवार्य रूप से वृक्षारोपण कराएं। सभी नगर निगम तथा नगरीय निकाय पार्कों एवं अन्य उपयुक्त शासकीय भूमियों पर पौधे रोपित करें। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पौधे रोपित करना हम सबकी नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी है।

बैठक में कमिश्नर ने कहा कि अब पूरा शासकीय कामकाज ई ऑफिस के माध्यम से हो रहा है। सभी अधिकारी फाइलें और जानकारियाँ ई ऑफिस के माध्यम से ही भेजें। अन्य माध्यम से फाइलें स्वीकार नहीं होंगी। ई ऑफिस में सात दिन की समय सीमा में शेष बचे कार्यालय यदि ऑनबोर्ड नहीं होते हैं तो संबंधित कार्यालय प्रमुख की एक वार्षिक वेतनवृद्धि अवरूद्ध करने की कार्यवाही की जाएगी। ई ऑफिस में फाइल दर्ज करने के साथ ही इनका मूवमेंट भी सुनिश्चित करें। संभागीय अधिकारी अपने जिला और अन्य अधीनस्थ कार्यालयों में भी ई ऑफिस की व्यवस्था सात दिवस में अनिवार्य रूप से लागू कर दें। कमिश्नर ने कहा कि संभाग में मछली पालन विभाग द्वारा 68 स्मार्ट फिश पार्लर स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है। आयुक्त नगर निगम तथा मुख्य नगर पालिका अधिकारी अपने निकाय में कम से कम एक स्मार्ट फिश पार्लर स्थापित कराएं। संयुक्त संचालक कृषि, सहायक संचालक उद्यानिकी तथा संयुक्त संचालक पशुपालन मछली पालन योग्य तालाबों के किसानों की सूची सात दिवस में उप संचालक मछली पालन को उपलब्ध कराएं, जिससे इनमें इस सीजन में मछली पालन किया जा सके।

कमिश्नर ने कहा कि इस वर्ष लगातार अच्छी वर्षा हो रही है। संभाग के जिन क्षेत्रों में बाढ़ की आशंका है वहाँ राहत और बचाव के पूरे प्रबंध कर लें। बाढ़ प्रबंधन के लिए उत्तरप्रदेश के अधिकारियों से सतत संपर्क में रहें। रपटों अथवा छोटे पुल जलमग्न होने पर बैरियर लगाकर तत्काल आवागमन बंद करें। कमिश्नर ने कहा कि कार्यक्षेत्र में महिलाओं के लैंगिक उत्पीड़न को रोकने के लिए माननीय न्यायालय के 2013 निर्देशों के अनुसार गठित आंतरिक समिति की नियमित रूप से बैठक आयोजित करें। समिति का हर तीन साल में पुनर्गठन करें। जिन कार्यालयों में समिति गठित नहीं है वे सात दिवस में समिति गठित कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करें। आंतरिक समिति का गठन न करने पर कार्यालय प्रमुख पर 50 हजार रुपए तक का जुर्माना भी लगाया जा सकता है। प्रत्येक जिले में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी को इसका नोडल अधिकारी बनाया गया है।

बैठक में कमिश्नर ने कहा कि सेमरिया से बिरसिंहपुर मार्ग पर सुधार का कार्य तत्काल करें। आईएफएमआईएस पोर्टल में नियमित कर्मचारियों के साथ-साथ नॉन रेग्युलर कर्मचारियों का समग्र डाटा अपलोड कराएं। कर्मचारियों के बैंक खाते में आधार सीडिंग अनिवार्य रूप से कराएं। बैठक में लंबित पेंशन प्रकरणों के निराकरण की भी समीक्षा की गई। बैठक में संयुक्त आयुक्त सुदेश मालवीय, संयुक्त दिव्या त्रिपाठी, उपायुक्त श्रेयस गोखले, संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे, डीन मेडिकल कालेज डॉ सुनील अग्रवाल, अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा डॉ आरपी सिंह, प्रभारी मुख्य अभियंता ऊर्जा प्रमा पाण्डेय, सहायक संचालक कृषि प्रीति द्विवेदी तथा अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी के दादा जीवनदास जी का निधन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी के दादा जीवन दास बागरी का 6 जुलाई को निधन हो गया। वह एक सम्मानित और सामाजिक रूप से सरि य व्यक्ति थे। उनका अंतिम संस्कार 7 जुलाई को प्रातः 10 बजे ग्रह ग्राम हरदुआ में किया गया। अंतिम संस्कार के समय भावुक माहौल में राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने अपने स्वर्गीय दादा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए नमन किया। अंतिम संस्कार में स्वर्गीय जीवन दास जी का पूरा परिवार उपस्थित रहा। जिसमें पुत्री रीता बागरी, पुत्र पूर्व जिला पंचायत सदस्य जय प्रताप बागरी, विजय प्रताप बागरी, नाती अनिल बागरी, प्रशांत बागरी प्रमुख रूप से शामिल रहे। क्षेत्र वासियों ने स्वर्गीय जीवनदास बागरी को श्रद्धांजलि अर्पित की और ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा शौकाकुल परिवार को इस कठिन घड़ी में धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की।

दुःख के इस घड़ी में विधायक चित्रकूट सुरेंद्र सिंह गहरवार, महापौर योगेश ताम्रकार, स्पीकर नगर निगम राजेश चतुर्वेदी, जिला अध्यक्ष भगवती प्रसाद पाण्डेय, पूर्व विधायक धीरेंद्र सिंह धीरू, रमाकांत गौतम, आकांक्षा सिंह, अखंड प्रताप सिंह सहित बड़ी संख्या में स्थानीय जन उपस्थित रहे।

जनप्रतिनिधियों ने राज्यमंत्री के दादाजी को अर्पित किये श्रद्धासुमन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना सांसद श्री गणेश सिंह सहित जिले के जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिकों ने मंगलवार को हरदुआ पहुंचकर राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी के दादाजी स्व. जीवनदास के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रृद्धांजलि दी। इस मौके पर राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी सहित परिजनों से मिलकर शोक संवेदना भी व्यक्त की। मंगलवार को पूर्व विधायक यादवेन्द्र सिंह, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष गगनेन्द्र सिंह, पूर्व स्पीकर अनिल जायसवाल ने भी राज्यमंत्री के गृहग्राम पहुंचकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी के पितामह जीवनदास बागरी के निधन पर ग्राम हरदुआ स्थित उनके पैतृक निवास पर श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों का मंगलवार को तांता लगा रहा। क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों, पार्टी पदाधिकारियों, समाजसेवियों व गणमान्य नागरिकों ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की और शोक संतप्त परिवार को ढांढस बंधाया। श्रद्धांजलि देने वालों में महापौर योगेश ताम्रकार, विधायक सुरेंद्र सिंह गहरवार, जिलाध्यक्ष भगवती प्रसाद पाण्डेय, नगर निगम अध्यक्ष राजेश चतुर्वेदी, पूर्व महापौर ममता पांडेय, अखण्ड प्रताप सिंह, अनिल जैसवाल, चन्द्रकमल त्रिपाठी, पिट्ठू सिंह, रमाकांत गौतम, विजय तिवारी, लौकेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शुक्ला, नारायण प्रताप सिंह, विष्णु पाण्डेय, राजेश शुक्ला, दुष्यंत सिंह गोलू, श्याम सिंह, राजीव सिंह, अजय द्विवेदी, रामशिरोमण सिंह, आरके बागरी, बालेंद्र गौतम, शिवा अग्रहरी, श्रीमती सीमा यादव, श्रीमती जानवी त्रिपाठी, सुनील बागरी, श्रीमती गीता सिंह, मौसम ताम्रकार, रामायण गौतम, आशू खत्री, राकेश चोपड़ा, राबिन खत्री, उमंग गौरी, समीर सिंह, कचनार सरपंच मुन्ना सिंह, राजनरायण तिवारी, संजय मिश्रा, गीतेश्वर सिंह, पार्षद आदित्य यादव, पार्षद गोपी गैलानी, पार्षद नीरज शुक्ला, सर्वजीत सिंह, सिब्बू सिंह, सरपंच टीकर बीरेंद्र कोरी, साकेत बिहारी त्रिपाठी, सरपंच विनोद उर्मालिया, रामसहाय गौतम, श्रीमती किरण सेन, उमेश द्विवेदी, चंद्रकमल त्रिपाठी, अजय द्विवेदी, आकांक्षा सिंह प्रमुख रूप से शामिल रहे।

प्रिज्म सीमेंट की चूना पत्थर खदान को मिला फाइव स्टार रेटिंग पुरस्कार

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रिज्म सीमेंट की चूना पत्थर खदान को मिला फाइव स्टार रेटिंग पुरस्कारप्रिज्म जॉनसन लिमिटेड के अंतर्गत संचालित प्रिज्म सीमेंट चूना पत्थर खदान (253.326 हेक्टेयर) को भारतीय खान ब्यूरो (आईबीएम) द्वारा सतत विकास मूल्यांकन में वर्ष 2023-24 के लिए 5-स्टार रेटिंग प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। यह पुरस्कार खान मंत्रालय, भारत सरकार के तहत 07 जुलाई 2025 को जयपुर, राजस्थान के इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित समारोह में दिया गया। केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की उपस्थिति में यह पुरस्कार प्रदान किया।प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड के एजीएम (सीएसआर एवं

जनसंपर्क) देवेंद्र मिश्रा ने बताया कि आईबीएम की 'स्टार रेटिंग' प्रणाली खदानों के सतत विकास ढांचे (स्ष्ठपरिवार) के तहत उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दी जाती है। देशभर की खदानों में से केवल 95 को ही 5-स्टार या 7-स्टार रेटिंग मिली। प्रिज्म सीमेंट की खदान ने व्यवस्थित खनन, पर्यावरण संरक्षण, सौर ऊर्जा उत्पादन, कौशल विकास, सामाजिक उत्थान और शासन में लगातार दूसरे वर्ष शानदार प्रदर्शन किया। लगातार 5 साल तक 5-ह्यह्लड्डह्म् पुरस्कार जीतने के बाद यह खदान 7-स्टार पुरस्कार के लिए आवेदन कर सकेगी।पुरस्कार प्रिज्म जॉनसन के प्रेसिडेंट एवं प्लांट हेड मनीष मुमार सिंह, एमआरएम व माइनिंग हेड विनोद श्रीवास्तव और माइंस हेड सी.एस. पंडित ने ग्रहण किया। कंपनी के प्रबंध निदेशक विजय अग्रवाल, कार्यकारी निदेशक व सीईओ राकेश जैन, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट (एचआरएम व कॉर्पोरेट अफेयर्स) मनीष मुमार सिन्हा सहित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने इस उपलब्धि पर बधाई दी।

हवाई सेवाओं के विस्तार के लिए सांसद ने ली बैठक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सांसद सतना श्री गणेश सिंह ने मंगलवार को सतना एयरपोर्ट पहुंचकर एयरपोर्ट एथारिटी और राजस्व तथा लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों की बैठक ली। इस मौके पर उन्होंने सतना एयरपोर्ट की एयर स्ट्रीप की लम्बाई 1200 से 1800 मीटर उन्नयन किये जाने के लिए आवश्यक भूमि और एयरपोर्ट के विस्तार की संभावनाओं के संबंध में अधिकारियों से चर्चा की। सांसद ने कहा कि सतना एयरपोर्ट से भोपाल और इंदौर की कनेक्टविटी के प्रचार-प्रसार के लिए फ्लाइट के टाइम शेडयूल और टिकट बुकिंग काउंटर तथा टिकट लेने की एडवांस बुकिंग की प्रक्रिया की जानकारी का सोशल मीडिया सहित अन्य प्लेटफार्म भी प्रचार-प्रसार किया जाये।

विचार

कर्नाटक कांग्रेस में बढ़ रहा आंतरिक राजनीतिक संकट

कर्नाटक कांग्रेस की राजनीति में मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं। कांग्रेस पार्टी के भीतर एक आंतरिक राजनीतिक संकट विकसित हो रहा है, जिसमें मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और उनके उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार के बीच सत्ता संघर्ष चल रहा है। क्या कर्नाटक में सत्ता परिवर्तन होगा? शिवकुमार के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया की जगह लेने की बढ़ती अटकलों ने अनिश्चितता का माहौल बना दिया है। सत्तारूढ़ कांग्रेस असहमति, आंतरिक संघर्ष, अनुशासन की कमी और अपने सदस्यों के बीच सत्ता संघर्ष से जूझ रही है, जिससे यह मामला और पेचीदा हो गया है। अफवाहें जोर पकड़ रही हैं, मुख्य रूप से इसलिए, क्योंकि जी. परमेश्वर जैसे वरिष्ठ नेताओं ने सार्वजनिक रूप से पार्टी के भीतर महत्वपूर्ण असंतोष को स्वीकार किया है। जबकि सिद्धारमैया कुछ नुकसान नियंत्रण करने का प्रयास कर रहे हैं, शिवकुमार खेमा खुले तौर पर नेतृत्व परिवर्तन की पैरवी कर रहा है। उनका दावा है कि यह अगले 3 महीनों के भीतर हो सकता है।

अगले 3 महीने की समय सीमा का कारण दिलचस्प है। अंदरूनी सूत्रों का दावा है कि सत्ता संघर्ष अब सामने आ गया है। इसके अलावा, कांग्रेस विधायक इकबाल हुसैन ने दावा किया है कि लगभग 100 विधायक नेतृत्व परिवर्तन के पक्ष में हैं, जो शीर्ष पर बदलाव का समर्थन करते हैं। डी.के. ने उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई जारी की है लेकिन बदलाव की संभावना बनी हुई है। 2023 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस सत्ता में लौटी। चर्चा थी कि दोनों नेता शीर्ष पद के दावेदार हैं। हाईकमान ने अढ़ाई साल का रोटेशनल फॉर्मूला पेश किया। इसके मुताबिक, सिद्धारमैया इस साल नवंबर तक कर्नाटक के मुख्यमंत्री के तौर पर अढ़ाई साल पूरे कर लेंगे। वह अपने नेतृत्व के 25 साल भी पूरे करेंगे। सिद्धारमैया को प्रशासन में उनके व्यापक अनुभव और ओ.बी.सी. समुदाय से उनके मजबूत समर्थन के लिए जाना जाता है।

साल के अंत में बिहार चुनाव नजदीक आने के साथ, कांग्रेस नेतृत्व एक महत्वपूर्ण ओ.बी.सी. नेता सिद्धारमैया को परेशान न करके स्थिरता बनाए रखने के लिए उत्सुक है। उनका प्रशासन मुफ्त में सामान देने, मुसलमानों को खुश करने और हिंदू समुदाय को विभाजित करने के लिए जाना जाता है। दूसरी ओर, शिवकुमार को 'मिस्टर-फिक्सिट' के रूप में जाना जाता है। डी.के. को 'गो-टू' मैन के रूप में जाना जाता है और कांग्रेस नेतृत्व ने अन्य कांग्रेस शासित राज्यों में भी असंतुष्टों से निपटने में उनका इस्तेमाल किया है।

उन्हें उनके कुशल नेतृत्व और संगठनात्मक कौशल के साथ-साथ उनके वित्तीय संसाधनों और आंतरिक असंतोष को प्रबंधित करने की क्षमता के लिए महत्व दिया जाता है। दोनों नेताओं का कांग्रेस में अपना योगदान है। संकट के समय पार्टी को उनकी जरूरत है। डी.के. के अलावा, अन्य उम्मीदवार भी इस पद के लिए होड़ में हैं। इक्षलगायत समुदाय के मंत्री एम.बी. पाटिल भी शीर्ष पद के लिए इच्छुक हैं। शिवकुमार वोक्कालिंगा समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि कुरुबा समुदाय से सिद्धारमैया एक महत्वपूर्ण ओ.बी.सी. व्यक्ति हैं। असंतुष्ट गतिविधि से चिंतित मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने हाल ही में कैबिनेट की बैठक में अपने मंत्रियों को पार्टी के आंतरिक मामलों के बारे में गोपनीयता बनाए रखने की चेतावनी दी, साथ ही कड़ी कार्रवाई की चेतावनी भी दी है। शिवकुमार ने सार्वजनिक रूप से कहा, ''पार्टी और हाईकमान जो चाहेगा वही होगा।'' उन्होंने कहा, ''मेरे पास क्या विकल्प है? मुझे उनके साथ खड़ा होना है और उनका समर्थन करना है।'' हालांकि, उनका खेमा 'डी.के. को सीएम बनाना' का नारा लगाता रहता है। इस बीच, सत्ता में वापसी के अवसर पर नजर गड़ाए भाजपा मध्यावधि चुनाव की भविष्यवाणी कर रही है और कह रही है कि कांग्रेस सरकार जल्द ही गिर सकती है। सिद्धारमैया ने नेतृत्व परिवर्तन के किसी भी सुझाव को खारिज कर दिया है और कांग्रेस आलाकमान ने भी ऐसी किसी संभावना से इंकार किया है। कांग्रेस नेता रणदीप सुरजेवाला द्वारा विधायकों और नेताओं के साथ बैठकों के बाद नेतृत्व परिवर्तन के लिए कोई कदम नहीं उठाए जाने की बात कहने के एक दिन बाद, मुख्यमंत्री ने पुष्टि की, ''कर्नाटक में मुख्यमंत्री में कोई बदलाव नहीं होगा।

बारिश का कहर: प्रकृति का विक्षोभ या विकास की विफलता ?

ललित गर्ग

बीते कुछ वर्षों में पहाड़ों में बारिश एवं बादल फटना अब डर, कहर और तबाही का पर्याय बन गई है। उराखंड, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, और पूर्वोर के अन्य पहाड़ी राज्यों में हर वर्ष मानसून के साथ भयावह भूस्खलन, बादल फटना, पुल बहना और सड़कें टूटना एक आम दृश्य बन गया है। यह केवल प्राकृतिक आपदा नहीं है, बल्कि एक व्यवस्थागत विफलता, सरकारी निर्माण की लापरवाही और अनियोजित विकास की पोल खोलने वाला यथार्थ है। निश्चय ही हाल के वर्षों में बारिश के पैटर्न में बदलाव आया है और बारिश की तीव्रता बढ़ी है। हर वर्ष जब मानसून की पहली बारिश पहाड़ों को भिगोती है, तो स्थानीय जनजीवन एक नई उमीद के साथ खिल उठता है। खेतों में हरियाली, नदियों में जल, और प्रकृति की शीतलता-मानसून एक उत्सव जैसा लगता है। लेकिन हालिया मानसूनी बारिश और मौसमी विक्षोभ की जुगलबंदी से हिमाचल के कई इलाकों में तबाही का जो भयावह मंजर उभरा, उसे हमें कुदरत के सबक के तौर पर देखना चाहिए। बड़ी संया में लोगों की मौत व लापता होने के साथ ही अरबों रुपये की निजी व सार्वजनिक संपणि का नुकसान हुआ है।

2023 और 2024 के मानसून ने हिमाचल और उत्तराखंड जैसे राज्यों में जो कहर बरपाया, वह केवल आँकड़ों में सीमित नहीं है। दर्जनों लोग मारे गए, सैकड़ों मकान जमींदोज़ हो गए, हजारों लोग बेघर हुए। हाइड्रो प्रोजेक्ट्स, सड़कों, सुरंगों और इमारतों के निर्माण ने जिस तरह से पहाड़ों की प्राकृतिक संरचना के साथ छेड़छाड़ की, वह अब प्रकृति के प्रतिशोध का कारण बन रही है। उत्तराखंड में 'ऑल वेदर रोड', हिमाचल में सुरंगें और जल विद्युत परियोजनाएं-इन सभी ने विकास के नाम पर जिस प्रकार अंधाधुंध खुदाई और कटान किए हैं, उससे पर्वतीय क्षेत्र अपनी स्थायित्व खोते जा रहे हैं। वैज्ञानिक चेतावनियों के बावजूद कई निर्माण कार्यों में भूगर्भीय सर्वेक्षण की अनदेखी की गई। नतीजा यह हुआ कि हल्की-सी भारी बारिश में ही सड़कें धंस जाती हैं, इमारतें दरकने लगती हैं, और पूरा गाँव मलबे में दब जाता है। वास्तव, पहाड़ी इलाकों में अतिवृष्टि से आपदा का जो भयावह मंजर उभर रहा है, उसके मूल में सिर्फ जलवायु परिवर्तन ही मुख्य कारक नहीं है। दरअसल, इस तबाही के मूल में हमारी नाजुक हिमालयी पारिस्थितीय तंत्र के प्रति बड़ी लापरवाही भी है। इस तथाकथित विकास के नाम पर हमने उन सीढ़ीनुमा रास्तों को दरकिनार कर दिया, जो पहाड़ों को मजबूती देते थे।

पहाड़ी क्षेत्रों में भूस्खलन कोई नई बात नहीं है, लेकिन हाल के वर्षों में इनकी तीव्रता और आवृत्ति में ज़बरदस्त वृद्धि देखी गई है। इसकी मुख्य वजहें हैं-अनियंत्रित पहाडों की कटिंग और खुदाई, बढ़ता भारी वाहन यातायात, जल निकासी की अव्यवस्था एवं वन क्षेत्र का अत्याधिक क्षरण। सरकारी निर्माण एजेंसियां अक्सर तय मानकों की अनदेखी करती हैं। निर्माण सामग्री घटिया होती है और मुनाफाखोरी के चक्कर में दीवारें और पुल बरसात में ताश के पत्तों की तरह ढह जाते हैं। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए), भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) और पर्यावरण वैज्ञानिक लगातार चेताते रहे हैं कि हिमालयी क्षेत्र बेहद संवेदनशील हैं। फिर भी, निर्माण कार्यों के लिए भू-सर्वेक्षण, पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन (ईआईए) और जनसुनवाई की प्रक्रियाओं को या तो टाल दिया जाता है या खानापूर्ति भर की जाती है। चार धाम यात्रा मार्ग पर बनने वाली सड़क परियोजनाओं को सुप्रीम कोर्ट ने भी कई बार रोका और सुझाव दिए कि पहाड़ों को काटने की बजाय टनल या वैकल्पिक मार्ग बनाए जाएं, लेकिन ज़मीनी हकीकत इससे उलट है।

निश्चय ही पूरी दुनिया में ग्लोबल वॉर्मिंग के चलते मौसम के बिगड़े तेवर नजर आ रहे हैं, लेकिन पहाड़ों में जल-प्रलय सी आपदा का विनाश निश्चय ही भयावह है। वैज्ञानिकों को इस तथ्य पर गंभीरता से विचार करना चाहिए कि पहाड़ों में बादल फटने की घटनाओं में अप्रत्याशित वृद्धि क्यों हुई है। इस साल की मानसूनी बारिश में मंडी जिले में बादल फटने की घटनाओं ने बुनियादी ढांचे, घरों, सड़कों और बगीचों को जिस तरह से नुकसान पहुंचाया है, उसने पहाड़ों में विकास के स्वरूप को लेकर फिर नये सिरे से बहस छेड़ दी है। राज्य के तमाम महत्वपूर्ण राजमार्ग भूस्खलन और अतिवृष्टि से बाधित रहे हैं। कांगड़ा घाटी में ऐतिहासिक रेल परिवहन को स्थगित करना पड़ा है। शिमला के पास एक बहुमंजिला इमारत के भरभरा कर गिरने के सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो ने भयभीत किया। जब बारिश आती है, तो केवल इमारतें और सड़कें नहीं ढहतीं, आम लोगों का जीवन भी उजड़ जाता है। लोग रातोंरात बेघर हो जाते हैं। स्कूल, अस्पताल, बिजली-पानी की सुविधाएं बंद हो जाती हैं। प्रशासनिक अमला अकसर घटनास्थल पर देर से पहुँचता है और राहत कार्यों में राजनीतिक रस्साकशी आड़े आ जाती है। राहत कैंपों में भोजन, शौचालय और दवाइयों की भारी कमी रहती है। जब किसी राज्य में बड़ी आपदा आती है, तभी मीडिया और नेताओं की नज़र जाती है। हेलिकॉप्टर से निरीक्षण, मुआवज़े की घोषणाएं, और 'हम साथ हैं' जैसे बयान आते हैं। लेकिन जैसे ही मौसम सामान्य होता है, पीड़ितों की सुध लेने वाला कोई नहीं रहता। लंबे समय तक पुनर्वास और पुनर्निर्माण कार्य अधर में लटकते हैं।

निश्चय ही मौसम के मिजाज में तल्खी नजर आ रही है लेकिन इस संकट के मूल में कहीं न कहीं अवैज्ञानिक विकास, खराब आपदा प्रबंधन और निर्माण में पारिस्थितिकीय ज्ञान की उपेक्षा भी निहित है। जिसने इस संकट को और अधिक बढ़ाया है। दरअसल, पानी के प्रवाह के जो प्राकृतिक रास्ते थे, हमने उन पर बहुमंजिली इमारतें खड़ी कर दी हैं। हमने अपेक्षाकृत नयी हिमालयी पर्वतमालाओं पर इतना भारी-भरकम विकास व निर्माण लाद दिया कि वे इस बोझ को सहन नहीं कर पा रही हैं। निर्माण कार्य में स्थानीय पारंपरिक वास्तुकला और प्राकृतिक सामग्री का प्रयोग बढ़ाया जाए। भू-सर्वेक्षण और ईआईए को अनिवार्य किया जाए, हर निर्माण से पहले वैज्ञानिक स्तर पर ज़मीन की जाँच और पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन आवश्यक हो। वनों की अंधाधुंध कटाई को रोका जाए और जलग्रहण क्षेत्रों को पुनर्स्थापित किया जाए। गाँवों और कस्बों के स्थानीय लोगों को निर्णय प्रक्रिया में शामिल किया जाए ताकि निर्माण कार्य ज़मीनी ज़रूरतों और जोखिमों के अनुसार हो।

हिमालय को केवल भूगोल नहीं, अध्यात्म का स्रोत भी माना जाता है। यहाँ की नदियां, पहाड़ और घाटियां धार्मिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व रखती हैं। जब इन स्थानों पर अंधाधुंध निर्माण होता है, तो केवल भू-आकृति नहीं, सांस्कृतिक चेतना भी नष्ट होती है। पर्वतीय जीवन में तबाही के पीछे केवल प्रकृति नहीं, हमारी नीति, नियत और विकास का वह मॉडल ज़िम्मेदार है जो केवल तात्कालिक लाभ और मुनाफे पर केंद्रित है। हम पहाड़ों को केवल पर्यटक स्थल या परियोजना-स्थल की दृष्टि से न देखें, बल्कि वहां के पर्यावरण, संस्कृति और जीवन पद्धति को समझें और संरक्षण का दायित्व लें। नहीं तो हर बारिश के साथ पहाड़ों से जीवन खिसकता जाएगा और एक दिन यह संकट केवल स्थानीय न रहकर राष्ट्रीय बन जाएगा। दरअसल, पहाड़ों की संवेदनशीलता को देखते हुए नये सिरे से निर्माण के मानक तय करने होंगे। वहीं दैनिक जल निकासी और बरसाती पानी के प्रवाह के लिये वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्था करनी होगी। निश्चित रूप से पहाड़ों में लगातार बढ़ती जनसंख्या और बुनियादी ढांचे में पहाड़ की प्राथमिकताओं को नजरअंदाज करने की कीमत हम चुका रहे हैं। भविष्य में ऐसी आपदाओं को टालने के लिये अतीत के सबक सीखकर हमें विकास के नये मानक तय करने होंगे। ऐसा लगता है कि किसी का इस पर ध्यान ही नहीं कि यदि बुनियादी ढांचे से जुड़े निर्माण की गुणवत्ता पर ध्यान नहीं दिया जाएगा तो जैसा हादसा मंडी अथवा शिमला में हुआ, वैसे हादसें होते ही रहेंगे और उनका दोष प्रकृति पर मढ़कर कर्तव्य की इतिश्री कर ली जाएगी। बात केवल हिमाचल की ही नहीं है, उत्तराखंड में भी कुछ स्थानों पर भूस्खलन होने से तीर्थयात्री संकट में पड़े हैं। इसका कोई मतलब नहीं कि हम बार-बार विकसित भारत की बात करें, लेकिन सरकारी निर्माण कार्यों की गुणवत्ता की अनदेखी करें और मानक होते हुए भी उनका पालन न करें। इस तरह से तो हम विकसित देश नहीं बन सकते।

मुनीर के पास सत्ता है मगर जनसमर्थन इमरान के साथ, शहबाज के पास प्रधानमंत्री पद है मगर प्रभाव नहीं

नीरज कुमार दुबे

पाकिस्तान की राजनीतिक तस्वीर को देखें तो एक ओर हैं फील्ड मार्शल आसिम मुनीर जोकि सेना प्रमुख तो हैं ही साथ ही उनकी पकड़ संसद, न्यायपालिका और विदेश नीति तक फैली है और दूसरी ओर हैं इमरान खान, जोकि पूर्व प्रधानमंत्री हैं और वह रावलपिंडी की अदियाला जेल में बंद होने के बावजूद आज भी देश की सबसे बड़ी जन-आवाज़ बने हुए हैं। सड़कों पर, जनता के दिल में और डिजिटल दुनिया में उनकी मौजूदगी लगातार बनी हुई है। हम आपको बता दें कि इमरान खान ने इस सप्ताह एक देशव्यापी आंदोलन शुरू करने का ऐलान किया है, जो मुहर्रम की दसवीं तारीख के बाद शुरू होगा। यह ऐलान ऐसे समय में आया है जब फील्ड मार्शल मुनीर अपने प्रभाव की चरम सीमा पर हैं- देश की संस्थाएं उनके नियंत्रण में हैं और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर वे पाकिस्तान के 'स्थायित्व' के प्रतिनिधि बनकर उभरे हैं। लेकिन इमरान का यह कदम इस तथाकथित स्थायित्व को चुनौती देने वाला हो सकता है। हम आपको याद दिला दें कि करीब दो हफ्ते पहले मुनीर ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ व्हाइट हाउस में एक गोपनीय बैठक की थी। इस बैठक में पाकिस्तान की आंतरिक स्थिरता और इमरान खान की स्थिति जैसे विषयों पर बातचीत हुई थी। उस दौरान इजराइल और ईरान के बीच चल रहे तनाव पर भी चर्चा हुई थी। खास बात यह है कि ट्रंप और मुनीर की इस मुलाकात के तुरंत बाद पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने इमरान खान की पार्टी पीटीआई के लिए आरक्षित सीटों को सत्ताधारी पीएमएल-एन और पीपीपी गठबंधन को सौंप दिया था जिससे संसद में उन्हें दो-तिहाई बहुमत मिल गया। पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले ने फरवरी 2024 के आम चुनाव में मिले जनादेश को पूरी तरह नकार दिया। पाकिस्तान के वरिष्ठ कानूनी विश्लेषकों ने इसे न्यायिक प्रक्रिया के माध्यम से राजनीतिक सफाया करार दिया है। हम आपको यह भी बता दें कि भले ही मुनीर वॉशिंगटन, रियाद और बीजिंग के दौरों पर पाकिस्तान का चेहरा बनते हैं, लेकिन पाकिस्तान और विदेशों में बसे पाकिस्तानियों के मन में अब भी इमरान खान ही बसे हैं। उनकी पार्टी पीटीआई का अभियान विदेशों में ऑनलाइन क्रांति बन चुका है। यूके, खाड़ी

देशों और उत्तरी अमेरिका में बसे हजारों कार्यकर्ता इमरान खान की पार्टी के संदेश- अन्याय, सेंसरशिप और चुराये गये जनादेश के खिलाफ अभियान चलाये हुए हैं। इमरान खान की पार्टी की डिजिटल फ्रंटलाइन तैयार हो चुकी है, जो सरकार के नियंत्रण को चुनौती दे रही है। मुनीर को भले ऐसा लगता हो कि उनकी वैश्विक स्वीकार्यता है लेकिन पाकिस्तान का इतिहास बताता है कि अय्यूब खान, जियाउल हक और परवेज़ मुशर्रफ जैसे सैन्य शासकों को भी अंतरराष्ट्रीय वैधता मिली थी, लेकिन घरेलू आक्रोश ने अंततः उन्हें हटा दिया था। देखा जाये तो आज, पाकिस्तान की जनता महंगाई, सेंसरशिप और लोकतांत्रिक अवरोधों से त्रस्त है। यदि इमरान खान के समर्थक सड़कों पर उतरते हैं और यह गुस्सा बेकाबू होता है, तो मुनीर की सत्ता की पकड़ कमजोर पड़ सकती है। पाकिस्तान में एक बात और स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ के पास पद तो है, पर प्रभाव नहीं है। असली मुकाबला संस्थागत ताकत वाले मुनीर और जनमानस के नायक इमरान खान के बीच ही है। एक ओर बंदूक की ताकत है तो दूसरी ओर वोट और भावना की ताकत। फील्ड मार्शल मुनीर भले ही पाकिस्तान पर राज कर रहे हैं लेकिन इमरान खान जेल से ही सही, पाकिस्तान के राजनीतिक भविष्य की दिशा तय करने वाली लड़ाई को लगातार जीवित रखे हुए हैं। जहां तक यह सवाल कि मुनीर और इमरान खान के बीच दुश्मनी कब से शुरू हुई तो आपको बता दें कि इस संघर्ष की जड़ें 2019 में हैं। असीम मुनीर उस समय ड्डस्ढ्ढ (इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस) के प्रमुख थे। उनके कार्यकाल के दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री इमरान खान को उनके करीबियों की भ्रष्ट गतिविधियों के बारे में रिपोर्ट दी थी। इनमें इमरान की पत्नी बुशरा बीबी के करीबी फ़राह गोगी और अन्य सहयोगियों का नाम सामने आया था। यह रिपोर्ट इमरान खान को अप्रिय लगी और परिणामस्वरूप मुनीर का प्रमुख के पद से असामान्य रूप से शीघ्र तबादला कर दिया गया था। उन्हें केवल आठ महीने में ही हटा दिया गया था जो प्रमुख के लिए असाधारण रूप से छोटा कार्यकाल था। यह वही क्षण था जब इमरान और असीम के बीच व्यक्तिगत खटास की शुरुआत हुई थी। इसके बाद अप्रैल 2022 में इमरान खान को अविश्वास प्रस्ताव के ज़रिए सत्ता से हटाया गया। इस प्रक्रिया में सेना की भूमिका को लेकर गहन संदेह और नाराज़गी उभरी। इमरान और उनकी पार्टी ने खुलेआम सेना को न्यूट्रल कहकर तंज कसे और आर्मी नेतृत्व को सत्ता परिवर्तन का दोषी ठहराया। जब असीम मुनीर को नवंबर 2022 में पाकिस्तान का सेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया था तब यह स्पष्ट हो गया कि सेना अब इमरान के खिलाफ पूरी तरह से संगठित हो चुकी है। मुनीर की नियुक्ति को इमरान की राजनीतिक वापसी की राह में सबसे बड़ी दीवार माना गया था। इमरान खान ने असीम मुनीर की नियुक्ति के बाद सेना और खिलाफ खुलेआम बोलना शुरू कर दिया था। उन्होंने बार-बार कहा कि मुख्य अपराधी रावलपिंडी में बैठा है, जो मुनीर की ओर इशारा था। मई 2023 में जब इमरान को गिरफ्तार किया गया था और पूरे पाकिस्तान में हिंसा और प्रदर्शन भड़के थे तब पीटीआई के खिलाफ भीषण दमन अभियान शुरू हुआ था। हजारों कार्यकर्ता जेलों में डाले गए, कई नेता पार्टी छोड़ने पर मजबूर हुए और मीडिया में इमरान की छवि को नुक़सान पहुँचाने की कोशिश की गई थी।

शिक्षा विभाग ने संभागीय संयुक्त संचालकों और जिला शिक्षा अधिकारियों को दिए निर्देश

युक्तियुक्तकरण के बाद शिक्षकों ने नहीं की ज्वॉइनिंग... अब कटेगी सैलरी

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। युक्तियुक्तकरण (रैशनलाइजेशन) के तहत ट्रांसफर किए गए जिन शिक्षकों ने अभी तक अपने नए अलॉटेड स्कूलों में ज्वॉइनिंग नहीं ली है, उनका वेतन अब रोक दिया जाएगा। शिक्षा विभाग ने इसे अनुशासनहीनता मानते हुए सख्त कार्रवाई करने का फैसला किया है।

ये पदस्थापना प्रदेश में शिक्षक विहीन, एकल शिक्षक और छात्र-शिक्षक अनुपात के अनुसार आवश्यकता के आधार पर किए गए थे। इसका मुख्य उद्देश्य उन स्कूलों में शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करना था जहां शिक्षकों की कमी थी। इस प्रक्रिया से बड़ी संख्या में अतिशेष शिक्षक प्रभावित हुए जिला, संभाग, राज्य स्तर पर शिक्षकों और व्याख्याताओं के पदस्थापना आदेश जारी किए गए थे।

शिक्षा विभाग ने सभी शिक्षकों को अलॉटेड स्कूलों में तत्काल ज्वॉइनिंग लेने के निर्देश दिए थे। हालांकि, इन स्पष्ट निर्देशों के बावजूद कई शिक्षकों ने अभी तक अपने नए स्कूलों में पोस्टिंग नहीं ली है। इसे गंभीरता से लेते हुए लोक शिक्षण संचालक ने एक आदेश जारी कर इन शिक्षकों का आगामी आदेश तक वेतन रोकने का आदेश दिया है।

आदेश की प्रति सभी संभागीय संयुक्त संचालकों और जिला शिक्षा अधिकारियों को भेज दिए गए हैं। हालांकि, यह आदेश उन शिक्षकों पर लागू नहीं होगा। जिन्होंने हाईकोर्ट से अंतरिम राहत प्राप्त की हुई है।

युक्तियुक्तकरण प्रक्रिया के दौरान कई जिलों और विकासखंडों में अतिशेष शिक्षकों और रिक्त पदों की जानकारी देने में गड़बड़ियां सामने आई थीं। इसके बाद दर्जन भर से अधिक विकासखंड शिक्षा अधिकारियों को निलंबित भी किया गया था। शिक्षकों का आरोप है कि पोस्टिंग के दौरान अधिकारियों ने जूनियर शिक्षकों को लाभ पहुंचाने के लिए उनके साथ मिलीभगत की है।

इस मिलीभगत के तहत सीनियर और रिटायरमेंट के करीब शिक्षकों को दूर के स्कूलों में भेज दिया। इस मामले पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है, जिससे शिक्षकों में नाराजगी है। कई शिक्षकों ने इस संबंध में जिला शिक्षा अधिकारी और कलेक्टर से भी शिकायत की है।

युक्तियुक्तकरण के बाद कई स्कूलों में शिक्षकों की पूर्ति तो हुई है, लेकिन इसके बावजूद प्रदेश में अभी भी 1200 स्कूल ऐसे हैं जहां केवल एक ही शिक्षक है। यह स्थिति शिक्षा व्यवस्था के लिए एक चुनौती बनी हुई है।

छत्तीसगढ़ में युक्तियुक्तकरण प्रक्रिया से एकल शिक्षकीय स्कूलों की संख्या में 80 प्रतिशत की कमी आई है। इस प्रक्रिया से पहले प्रदेश में 453 स्कूल शिक्षक विहीन और 5936 स्कूलों में मात्र एक ही शिक्षक पदस्थ था। सुकमा, नारायणपुर और बीजापुर जैसे दूरस्थ और संवेदनशील जिलों में यह समस्या अधिक थी।

इस विसंगति को दूर करने के लिए राज्य सरकार ने जिला, संभाग और राज्य स्तर पर 3 चरणों में शिक्षकों की काउंसलिंग की प्रक्रिया चलाई। जिसके बाद प्रदेश का कोई भी स्कूल शिक्षक विहीन नहीं है और सभी हाई स्कूलों में न्यूनतम आवश्यक शिक्षक नियुक्त किए जा चुके हैं।

फ्री फायर गेम की लत ने ली छात्र की जान

बिलासपुर में दोस्तों संग घूमते-घूमते मोबाइल पर खेल रहा था गेम, फिसलकर गिरने से मौत

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (निप्र)। बिलासपुर में फ्री फायर गेम की लत में मशगूल छात्र की हादसे में जान चली गई। छात्र रात में अपने दोस्तों के साथ घूमने निकला था। इस दौरान वो मोबाइल पर गेम खेल रहा था। तभी रास्ते में सड़क पर फिसलकर गिर गया। जिससे उसके सिर पर गंभीर चोटें आई। हादसे में छात्र की मौत हो गई। घटना चकरभाठा थाना क्षेत्र की है।

चकरभाठा बस्ती निवासी राहुल लखवानी ने बताया कि, उनका व्यापार है, जिसका संचालन के उसके पिता करते हैं। मंगलवार की रात राहुल अपने दोस्तों के साथ घूमने निकला था। वो मोबाइल पर गेम खेलते-खेलते घूम रहा था। इस दौरान उसने अपने भाई आदित्य लखवानी को भी मोबाइल पर फ्री फायर गेम ऑन करने के लिए बोला। तो वो भी मोबाइल पर गेम खेलते हुए बाहर निकल गया।

14 साल का आदित्य लखवानी 9मीं कक्षा का छात्र था। वो अपने मोबाइल पर गेम खेलते-खेलते टहल रहा था। इस दौरान गेम खेलने में इतना मशगूल हो गया कि सड़क पर चलते हुए फिसल कर गिर गया। इस हादसे में उसके सिर पर गंभीर चोंट लगी। जिससे वो बेहोश पड़ा रहा।

इसकी जानकारी मिलते ही राहुल और उसके दोस्तों ने उसे बिल्हा अस्पताल पहुंचाया, जहां उसकी हालत देखकर उसे सिम्स भेज दिया गया। सिम्स में जांच के बाद डॉक्टरों ने बताया कि उसकी मौत हो चुकी है।

राहुल ने बताया कि, देर रात तक घूमते देखकर पुलिस की पेट्रोलिंग टीम ने उन्हें टोका। पुलिसवालों ने उन्हें देर रात तक घूमने से मना किया और घर जाने की सलाह दी। इस पर वो सभी अपने घर जा रहे थे। तभी रास्ते में यह हादसा हो गया और आदित्य की जान चली गई।

16 पिलरों को कूद-कूदकर नदी पार करते ग्रामीण, गांव बना टापू

मीडिया ऑडीटर, कांकेर (निप्र)। छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में चार गांवों के लिए बारिश मुसीबत बन जाती है। जिला मुख्यालय से 45 किलोमीटर दूर बांसकुंड, ऊपर तोनका, नीचे तोनका और चलाचूर गांव के 500 से अधिक लोग बारिश के मौसम में टापू में कैद हो जाते हैं।

आज तक यहां चिनार नदी पर पुल नहीं बना है। ग्रामीणों को आवागमन के लिए नदी पर बने स्टॉप डेम का सहारा लेना पड़ता है। वे 16 पिलरों पर कूद-कूदकर नदी पार करते हैं। स्कूली बच्चों को भी इसी खतरनाक रास्ते से गुजरना पड़ता है।

बारिश के दिनों में शिक्षक स्कूल नहीं पहुंच पाते। मरीजों को अस्पताल ले जाना मुश्किल हो जाता है। आपात स्थिति में ग्रामीणों को गांव में ही इलाज कराना पड़ता है। नदी में पानी ज्यादा होने पर स्थिति और भी खतरनाक हो जाती है।

ग्रामीण पिछले कई सालों से पुल की मांग कर रहे हैं। अब तक सिर्फ

एक अधूरी कच्ची सड़क ही बन पाई है। प्रशासन की अनदेखी से परेशान ग्रामीणों ने सरकार से चिनार नदी पर जल्द पुल बनाने की मांग की है। इससे उनका जीवन सामान्य हो सकेगा।

जिला पंचायत सीईओ हरेश मंडावी ने कहा कि पुल की मांग लंबे समय से की जा रही है। इसका प्रस्ताव हम लोगों ने बनाया है। ग्रामीणों को इसका लाभ पहुंचे ऐसा पुल हम बनाकर देंगे।

नशे में युवती का हंगामा...पुलिस से की बहस

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (निप्र)। कोरबा के टीपी नगर स्थित पॉम मॉल में संचालित वन नाइट क्लब के बाहर दो पक्षों में विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ा कि दोनों पक्षों ने एक-दूसरे से मारपीट की। पहले पक्ष में एक युवती थी और उसके साथ एक लड़का था, जिसे वह अपना पति बता रही थी। दूसरे पक्ष में कार में 2 भाई थे।

मामला सीएसईबी चौकी छाना क्षेत्र का है। घटना रात 10 बजे की है। पब से निकलने के बाद चारों नशे में थे। स्कूटी सवार युवक-युवती ने खूब गाली गलौज किया और युवती ने पुलिस से भी बहस की। पुलिस कह रही है कि परिवारढ्ढर

के बाद कार्रवाई होगी। वहीं, दूसरे पक्ष के एक शख्स ने बीयर की बोतल से मारने का आरोप लगाया है। घटना में थार वाहन में तोड़फोड़ की गई। गाड़ी के सामने का कांच फूटा हुआ था। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने दोनों पक्षों को समझाने का प्रयास किया। लेकिन दोनों पक्ष एक-दूसरे पर मारपीट का आरोप लगाते रहे।

इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वन नाइट क्लब में यह पहली घटना नहीं है। इससे पहले भी कई ऐसी घटनाएं सामने आ चुकी हैं। स्थानीय लोगों ने इसकी शिकायत सीएसईबी चौकी पुलिस से की है।

ग्राम हर्रई में डायरिया रोकथाम को लेकर जागरूकता अभियान

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। विकासखंड भरतपुर अंतर्गत ग्राम पंचायत हर्रई में जल जीवन मिशन के अंतर्गत "स्टॉप डायरिया कैंपेन" के तहत लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा एक विशेष जागरूकता कार्यर्₹ म का आयोजन किया गया। इस कार्यर्₹ म का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में डायरिया जैसी जानलेवा बीमारी की रोकथाम करना और लोगों को स्वच्छता, शुद्ध पेयजल एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना था। कार्यर्₹ म के दौरान विभागीय टीम ने ग्रामीणों को साफ-सफाई के महत्व, हाथ धोने की वैज्ञानिक विधि, स्वच्छ जल के नियमित उपयोग और खुले में शौच से बचने जैसे अहम बिंदुओं की विस्तार से जानकारी दी। उपस्थित लोगों को यह समझाया गया कि डायरिया

जैसी बीमारियां गंदगी और असुरक्षित जल सेवन से होती है, जिन्हें केवल स्वच्छता और सतर्कता से रोका जा सकता है। इस अवसर पर ग्राम के पुरुष, महिलाएं और बच्चे ब?ी संख्या में मौजूद रहे और उन्होंने विभाग द्वारा दी जा रही जानकारी को गंभीरता से सुना और समझा। अधिकारियों ने ग्रामीणों से अपील की कि वे इस जानकारी को अपने दैनिक जीवन में अपनाएं और अपने आस-पास के लोगों को भी जागरूक करें। इस पहल से न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य को सुरक्षित रखा जा सकता है, बल्कि पूरे समुदाय में बीमारियों के प्रसार को भी रोका जा सकता है। विभाग द्वारा दी गई यह जानकारी ग्रामीणों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई और पूरे कार्यर्₹ म में ग्रामीणों की सहभागिता उत्साहजनक रही, जिससे स्पष्ट है कि ग्रामीण समाज अब स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता की दिशा में सरि् यता से आगे बढ रहा हैं।

उप अभियंता नगर पालिक परिषद मनेद्रगढ़ में कई वर्षों से जमे

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर जन दर्शन में मनेंद्रगढ़ नगर पालिका परिषद में उप अभियंता के पद पर पदस्थ पवन साहू साल 2018-19 से मनेंद्रगढ़ में पदस्थ हैं जो की नियम विरुद्ध है. नियम के खिलाफ जाकर भी पद पर बने रहने के संबंध में आज शिकायत पत्र दिया गया है. इस विषय पर आम आदमी पार्टी जिला अध्यक्ष रमाशंकर मिश्रा ने बताया कि, मनेंद्रगढ़ नगर पालिका परिषद में बीते पांच साल जम के भ्रष्टाचार हुआ और सत्ता बदलने के बाद भी स्थिति वैसी ही है. नगर पालिका में हो रहे इस लूट में वहाँ पदस्थ उप अभियंता पवन साहू की की मुख्य भूमिका है. चाहे पूर्व में बिना विज्ञप्ति करोड़ों का टेंडर निकालना हो, चाहे अभी वार्ड 19 में बन रहा रिटर्निंग वाल हो, चाहे गैस पाइप लाइन का काम हो, चाहे उल्टा सीधा नाली निर्माण और चकर टाइल्स लगाने का काम हो, हर काम में साहू जी का कमीशन सेट है. रमाशंकर मिश्रा ने आगे कहा की आखिर क्या कारण है कि पवन साहू नियम विरुद्ध एक ही जगह तीन साल से भी ज्यादा समय से पदस्थ हैं?

आम आदमी पार्टी जिला अध्यक्ष ने आगे कहा कि, इसके साथ ही पवन साहू राजनैतिक प्रभाव व अपने पद का दुरूपयोग करते हुए, विशेष ठेकेदारों के आदेश पर उनको लाभ पहुंचाने के लिए कमीशन के आधार पर कार्य आबंटित करते हैं, जो की न्याय संगत व व्यवहारिक नहीं है तथा ये सरासर पद का दुरपयोग की श्रेणी में आता है। नगर पालिका मनेंद्रगढ़ में पदस्थ उप अभियंता पवन साहू पर जल्द से जल्द उचित कार्यवाही ना होने ही दशा में व अन्यत्र कहीं ट्रान्सफर ना किए जाने पर आम आदमी पार्टी जिला इकाई द्वारा उग्र आंदोलन किया जायेगा।

स्वास्थ्य मंत्री के प्रयासों से चिरमिरी को मिली बड़ी सौगात

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। चिरमिरीवासियों के लिए बड़ी खुशखबरी है। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल के अथक प्रयासों से चिरमिरी क्षेत्र को वर्षों पुरानी पेयजल समस्या से निजात मिलने जा रही है। अमृत मिशन 2.0 योजना के अंतर्गत राज्य शासन ने चिरमिरी नगर निगम क्षेत्र में पेयजल परियोजना के लिए 185 करोड़ रुपये की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है।

यह परियोजना लंबे समय से पेयजल संकट से जूझ रहे सैकड़ों परिवारों के लिए राहत लेकर आएगी। पानी की अनियमित आपूर्ति और गंदे पानी की समस्या से परेशान क्षेत्रवासियों को अब नियमित और स्वच्छ जल मिल सकेगा।

स्वास्थ्य मंत्री श्री जायसवाल ने इस स्वीकृति के लिए मुख्यमंत्री और शहरी प्रशासन विभाग का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह परियोजना चिरमिरी क्षेत्र के विकास में एक मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने बताया कि जल्द ही निर्माण कार्य प्रारंभ किया जाएगा। जल्द ही चिरमिरी की धरती पर बहता साफ़ और शुद्ध जल न केवल स्वास्थ्य लाभ देगा बल्कि नागरिकों का जीवन स्तर भी ऊँचा उठाएगा।स्थानीय नागरिकों ने इस पहल के लिए मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल का आभार व्यक्त किया और कहा कि वर्षों बाद किसी जनप्रतिनिधि ने क्षेत्र की मूलभूत समस्याओं को गंभीरता से लिया है।

युवाओं को मिलेगा प्रशिक्षण के बाद स्थायी रोजगार

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। भारतीय सुरक्षा दक्षता परिषद नई दिल्ली के तत्वाधान में स्ढ्ढस् (इंडिया) लिमिटेड द्वारा सुरक्षा सेवाओं में रोजगार उपलब्ध कराने हेतु जिले के विभिन्न थाना व चौकी परिसरों में पंजीयन शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। कमांडेंट, क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र परसवार, अनुपपुर के निर्देशानुसार यह पहल उन युवाओं के लिए सुनहरा अवसर है जो सुरक्षा क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त कर स्थायी रोजगार प्राप्त करना चाहते हैं। यह शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक आयोजित होंगे जिसमें युवाओं का पंजीयन कर प्रशिक्षणोपरांत स्ढ्ढस् ग्रुप में नियोजन किया जाएगा। शिविर की शुरुआत 12 जुलाई 2025 को थाना परिसर चिरमिरी से होगी, इसके बाद 13 जुलाई 2025 को थाना परिसर झगराखांड में, 15 जुलाई 2025 को थाना परिसर जनकपुर में, 16 जुलाई 2025 को चौकी परिसर कुंवारपुर में, 17 जुलाई 2025 को चौकी परिसर खोंगापानी में, 19 जुलाई 2025 को चौकी परिसर को?ा, 20 जुलाई 2025 को थाना परिसर ख?गवां में, 21 जुलाई 2025 को थाना परिसर कोटाडोल में, 22 जुलाई 2025 को थाना परिसर केल्हारी में, 23 जुलाई 2025 को थाना परिसर पो?ी में तथा 25 जुलाई 2025 को थाना परिसर मनेन्द्रग? में शिविर का आयोजित किया जाएगा। एमसीबी जिले के पुलिस अधीक्षक द्वारा सभी थाना एवं चौकी प्रभारियों को शिविर आयोजन में आवश्यक सहयोग प्रदान करने के निर्देश दिए गए हैं ताकि अधिक से अधिक युवाओं को रोजगार का लाभ मिल सके।

मनेंद्रगढ़ को मिली सेंट्रल लाइब्रेरी की सौगात, 441 लाख से होगा निर्माण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल के सतत प्रयासों से मनेंद्रगढ़ जिले को एक बड़ी सौगात मिली है। राज्य शासन द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 के अंतर्गत मनेंद्रग?-चिरमिरी-भरतपुर क्षेत्र में सेंट्रल लाइब्रेरी सहित रीडिंग ?ोन के निर्माण के लिए 441.49 लाख रुपए की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है। इस परियोजना के तहत नगर पालिक निगम चिरमिरी में 250 सीटों की क्षमता वाली आधुनिक लाइब्रेरी का निर्माण किया जाएगा, जिससे क्षेत्र के छात्र-छात्राओं, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं तथा पुस्तक प्रेमियों को बेहतर अध्ययन सुविधा मिल सकेगी। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने इस महत्वपूर्ण स्वीकृति के लिए मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय तथा वित्त मंत्री श्री ओपी चौधरी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह लाइब्रेरी न केवल युवाओं के करियर निर्माण में सहायक होगी, बल्कि ज्ञान आधारित समाज की दिशा में भी एक मजबूत कदम साबित होगी। उन्होंने बताया कि इस लाइब्रेरी में आधुनिक सुविधाएं, डिजिटल अध्ययन सामग्री और शांत रीडिंग ?ोन की व्यवस्था की जाएगी। यह विकास कार्य क्षेत्रीय समानता और शैक्षणिक सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक पहल है। स्थानीय नागरिकों एवं विद्यार्थियों में इस घोषणा को लेकर खुशी की लहर है। सभी ने इस पहल के लिए मंत्री श्री जायसवाल का आभार जताया है।

रील बनाने चलती कार में किया स्टंट

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (निप्र)। कोरबा शहर में चलती कार की छत पर बैठे कर युवकों का स्टंट करते हुए वीडियो सामने आया है। निहारिका मुख्य मार्ग पर कुछ युवकों ने कार की खिड़की से बाहर खड़े होकर और छत पर बैठकर रील बनाई।वमामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है। राहगीरों ने इस घटना का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर शेयर किया। स्थानीय लोगों ने इस तरह की हरकतों पर कार्रवाई की मांग की है।

आतंकी तहव्वुर राणा 26/11 हमले के वक्त मुंबई में था

नई दिल्ली (एजेंसी)। 26/11 आतंकी हमले के वक्त आतंकी तहव्वुर राणा मुंबई में था। यह बात उसने एनआईए की पूछताछ में कबूल की है। इंडिया टुडे की रिपोर्ट के मुताबिक, राणा ने माना है कि वह पाकिस्तानी सेना का एजेंट है। उसने बताया कि उसने डेविड कोलमैन हेडली के साथ पाकिस्तान में लश्कर-ए-तैयबा के कई ट्रेनिंग सेशन किए थे। राणा ने यह भी कहा कि लश्कर असल में एक जासूसी नेटवर्क की तरह काम करता है। पूछताछ में शामिल मुंबई पुलिस की क्राइम ब्रांच अब राणा को गिरफ्तार करके रिमांड पर लेने की तैयारी में है। अभी राणा एनआईए की न्यायिक हिरासत में है, जिसे दिल्ली की अदालत ने 9 जुलाई तक बढ़ा दिया है। तहव्वुर को अमेरिका के शिकागो में अक्टूबर 2009 में अमेरिकी एजेंसी एफबीआई ने गिरफ्तार किया था। राणा को 10 अप्रैल को स्पेशल विमान से अमेरिका से भारत लाया गया था। मुंबई में खोला था इमिग्रेशन सेंटर राणा ने पूछताछ में बताया कि मुंबई में उसने अपनी कंपनी का इमिग्रेशन सेंटर खुद के प्लान से खोला, ताकि हमले की तैयारी के लिए जगह और सुविधाएं मिल सकें। वहां किए गए लेन-देन को बिजनेस खर्चों में दिखाया गया। उसने यह भी स्वीकार किया कि छत्रपति शिवाजी टर्मिनस जैसे स्थानों की खुद जाकर रेकी की थी।

तेलंगाना फैक्ट्री धमाका-मरने वालों का आंकड़ा 42 हुआ

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना की फॉर्मा फैक्ट्री धमाके में मरने वालों का आंकड़ा 42 हो गया है। रविवार को एक व्यक्ति की अस्पताल में मौत हो गई, जबकि एक शव की पहचान डीएनए जांच से हुई है। 8 लोगों लापता हैं। हादसे से 6 दिन बाद भी सर्च ऑपरेशन जारी है। अधिकारियों ने रविवार को बताया कि शनिवार और रविवार को घटनास्थल से कुछ हड्डियां और शरीर के जले अंग मिले हैं। इनका डीएनए टेस्ट चल रहा है। यदि इनका मिलान होता है तो लापता लोगों की संख्या घट सकती है। हादसा 30 जून को पाशमिलारम इंडस्ट्रियल एरिया स्थित सिगाची इंडस्ट्रीज में सुबह 8.15 बजे से 9.30 बजे के बीच हुआ था। घटना के दौरान फैक्ट्री में 150 लोग थे, जहां ब्लास्ट हुआ वहां 90 लोग मौजूद थे। उस दिन रेस्क्यू और मेडिकल टीम ने 31 शव बरामद किए थे।मृतकों के परिजन को 1 करोड़ 2 लाख रुपए का मुआवजा मिलेगा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पीएम नेशनल रिलीफ फंड से मृतकों के परिजन को 2 लाख और घायलों को 50 हजार की मदद की घोषणा की थी। वहीं, कंपनी ने मृतकों के परिजन को 1 करोड़ रुपए, गंभीर रूप से घायलों को 10 लाख रुपए और अन्य घायलों को 5 लाख रुपए मुआवजे की घोषणा की थी।

प्रदेश के 50 प्रतिशत ग्रामों को जोड़ेंगे दुग्ध नेटवर्क से -मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार प्रदेश में दुग्ध उत्पादन बढ़ाकर किसानों और पशुपालकों की आर्थिक उन्नति के लिए प्रतिबद्ध है। प्रदेश के 50 प्रतिशत गांवों को दुग्ध नेटवर्क में लाने की रणनीति पर कार्य किया जा रहा है। नई 381 दुग्ध सहकारी समितियों का गठन कर 9500 दुग्ध उत्पादकों को सहकारी डेयरी प्रणाली से जोड़ा गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को मुख्यमंत्री निवास में पशुपालन एवं डेयरी विकास विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा कर रहे थे। उल्लेखनीय है कि केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने मध्यप्रदेश के लिए डेयरी विकास योजना को क्रियान्वित करने के लिए आवश्यक संशोधन कर अधिक लाभकारी बनाने के निर्देश दिए थे। अब राज्य में दुग्ध उत्पादन की 72 प्रतिशत संभावित क्षमता को कवर करने और बाजार पहुंच को 15प्रतिशत बढ़ाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

लुधियाना और पंजाब के निवेशकों को मध्यप्रदेश में किया आमंत्रित-मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि देश का आर्थिक तंत्र मजबूत हुआ है। देश में औद्योगीकरण बढ़ा है, अब हम विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गए हैं। लुधियाना भारत का मैन्चेस्टर है। यहां के उद्योगपतियों ने बड़ी मेहनत से अपनी पहचान बनाई है। लुधियाना में निर्मित ए-वन और हीरो साइकिल्स देश-दुनिया में मशहूर हैं। पंजाब के निवेशक देश की आर्थिक समृद्धि में योगदान देने वाले प्रमुख ध्वजवाहक हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज लुधियाना में हुये इंटरैक्टिव सेशन, वन-टू-वन चर्चा और संवाद सत्रों में यहां के उद्योगपतियों से 15 हजार 606 करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुये हैं, जिससे 20 हजार से अधिक रोजगार का सृजन होगा। हमने लुधियाना और पंजाब के उद्योपतियोंत को मध्यप्रदेश में उद्योग लगाने के लिये आमंत्रित किया। साथ ही उन्हें मध्यप्रदेश में उपलब्ध संसाधनों के साथ राज्य की औद्योगिक नीतियों से भी अवगत कराया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को पंजाब की उद्योग नगरी लुधियाना में मध्यप्रदेश में निहित निवेश की संभावनाओं के संबंध में निवेशकों को संबोधित कर रहे थे।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश देश का एकमात्र प्रदेश है, जहां पन्ना जिले में हीरा तो शहडोल में आयरन डिपाजिस्ट्स है। बीते दिनों सिंगरौली जिले में सोने की खदानें भी मिली हैं। मुख्यमंत्री

डॉ. यादव ने सभी निवेशकों को मध्यप्रदेश की रत्नगर्भा भूमि में निवेश करने के लिए आत्मीयता से आमंत्रित करते हुए कहा कि यहां व्यापार की असीम संभावनाएं हैं। आइये और मध्यप्रदेश में अपना दूसरा घर बनाईये। उन्होंने कहा कि निवेशक मध्यप्रदेश में जितने चाहें, उतने उद्योग-धंधे लगाएं, सरकार पलक-पावड़े बिछाकर आपका स्वागत करेगी, आपकी हर संभव मदद करेगी। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में उद्योग-धंधे लगाने के लिए जरूरत के मुताबिक भूमि, बिजली, पानी, कुशल कार्यशक्ति सब उपलब्ध हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश और पंजाब दोनों भाइयों की तरह हैं। अनाज के उत्पादन में पंजाब बड़ा और मध्यप्रदेश छोटा भाई है। ?अब दोनों भाई मिलकर देश और मध्यप्रदेश का विकास करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश प्रगति पथ पर है। पंजाब वीरों की धरती है, इसकी अलग ही पहचान है। यह गुरु परंपरा की अद्भुत धरती है। मध्यप्रदेश के इंदौर की पहचान स्वच्छता में है, तो लुधियाना की पहचान उद्योगों से है। हम उद्योगपतियों को मध्यप्रदेश में उद्योग लगाने के लिए आमंत्रित करने आए हैं। आप खुले दिल से और बिना किसी हिचक के निवेश करें, सरकार जितनी हो सकेगी, आपकी उतनी मदद करेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत बदलते दौर में सिरमौर बन रहा है। उद्योगों से कई परिवारों का उदर-पोषण होता है और गरीबों के जीवन में आमदनी का उजाला आता है। यह एक पवित्र कार्य है। उद्योगपति अपने परिवार का पोषण करते हुए दूसरों का भी घर रौशन करते हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब अमर शहीद भगत सिंह की धरती है, जिन्होंने सर्वोच्च बलिदान देकर देश की आजादी में अहम भूमिका निभाई। मुख्यमंत्री ने कहा कि आप लोग यहां भी काम करते रहें और अपने कारोबार का विस्तार करते हुए एक-दो फैक्ट्री मध्यप्रदेश में भी लगाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस) में मध्यप्रदेश सरकार ने अपनी उद्योग अनुकूल नीतियों को दुनिया के सामने रखा। हमने उद्योगपतियों को कई सौगातें दी हैं। टेक्सटाईल्स सेक्टर के इंडस्ट्रियल वर्कर्स की सैलरी में मध्यप्रदेश सरकार 5 हजार रुपए की अतिरिक्त मदद देगी। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में स्कूली बच्चों को साइकिलें बांटी जा रही हैं। साइकिलें मुख्यतः पंजाब में ही बनती हैं। यही साइकल मध्यप्रदेश में भी बन सकती हैं। उद्योगपति मध्यप्रदेश में साइकल बनाने की फैक्ट्री लगाएं। उन्होंने कहा कि भारत दुनिया में सोने की चिड़िया की पहचान रखता था। वर्ष 1947 में देश आजाद हुआ, तब भारत दुनिया की 15वीं अर्थ-व्यवस्था हुआ करता था। इजरायल और जापान जैसे देश कहां से कहां पहुंच गए। वर्ष 2014 में भारत 11वें स्थान पर था और आज बदलते दौर में प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया की चौथी बड़ी अर्थ-व्यवस्था बन गया है और अब तीसरी अर्थ-व्यवस्था बनने की ओर बढ़ रहा है।

कहीं शकर-चावल तो कहीं कम मिला गेहूं, कार्रवाई

भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के कोलार इलाके की 6 उचित मूल्य की दुकानों पर खाद्य विभाग की टीम ने औचक निरीक्षण किया। इस दौरान ढेरों गड़बड़ी मिली। कहीं शक्कर और चावल कम मिले तो कहीं गेहूं। स्टॉक से कम सामान मिलने पर प्रकरण बनाने की कार्रवाई की गई। जिला आपूर्ति नियंत्रक चंद्रभान सिंह जादौन की मौजूदगी में यह कार्रवाई की गई।

उन्होंने बताया, शनिवार को कोलार क्षेत्र की दुकानों की जांच की गई। टीम में सहायक आपूर्ति अधिकारी संदीप भार्गव, कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी मयंक द्विवेदी और तृणाल जांभोलकर शामिल थे। कोलार क्षेत्र की निशिता प्राथमिक उपभोक्ता भंडार, कल्याणी प्राथमिक उपभोक्ता भंडार इनायतपुर, हरियाली स्व-सहायता समूह बोरदा, मोनिका उपभोक्ता भंडार प्रियंका नगर, सक्षम प्राथमिक उपभोक्ता भंडार बंजारी और अहिल्या प्राथमिक उपभोक्ता भंडार बीमाकुंज द्वारा संचालित अलग-अलग 6 शासकीय उचित मूल्य की दुकानों की जांच की गई। इस दौरान निशिता भंडार में 1080 किलो चावल, 45 किलो शकर कम पाई गई। कल्याणी भंडार में 726 किलो गेहूं, 1284 किलो चावल कम, 956 किलो नमक और 17 किलो शकर अधिक मिली। इसी प्रकार अन्य दुकानों में भी अनियमितताएं पाई गईं।

खड़गे बोले- नीतीश-नायडू की टांगों पर चल रहे मोदी

रायपुर (एजेंसी)। रायपुर में आयोजित किसान, जवान और संविधान जनसभा में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा- मोदी दो टांगों से चल रहे हैं। मोदी की एक टांग आंध्र की टीडीपी है और दूसरी बिहार के नीतीश कुमार। इनमें से कोई भी हिली तो मोदी जी गिर जाएंगे। खड़गे ने कहा कि केंद्र सरकार भय और झूठ फैलाकर देश पर राज कर रही है। ये लोग हर जगह

मिलकर गरीबों को लूटने और डराने का काम कर रहे हैं, लेकिन कांग्रेस का कार्यकर्ता डरने वाला नहीं है, मर-मिटने को तैयार है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के कार्यकाल में जो जनकल्याणकारी योजनाएं चलाई गईं, उन्हें भाजपा सरकार ने बंद कर दिया है। 67 नई शराब की दुकानें खोल दीं और नकली शराब बेचने का धंधा शुरू कर दिया। ये लोग सिर्फ कारोबार के नाम पर समाज को खोखला कर रहे हैं। खड़गे ने आरएसएस और भाजपा पर संविधान की मूल आत्मा से खिलवाड़ करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि संघ के एक विचारक ने 'सोशलिज्म' और 'सेक्युलरिज्म' शब्दों को संविधान से हटाने की बात कही है। 1980 में आपने अपने ही संविधान में क्या लिखा था? अब इन्हीं शब्दों को हटाने की कोशिश कर रहे हैं। ये शब्द हटाकर तो देखिए, पूरा देश आपके खिलाफ खड़ा हो जाएगा। खड़गे ने कहा कि एक दिन भाजपा खुद अपने कामों पर शर्मिंदा होगी।

उपराष्ट्रपति बोले- जस्टिस वर्मा केस में तुरंत एफआईआर की जरूरत

नई दिल्ली (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सोमवार को जस्टिस वर्मा के घर में मिले अधजले नोटों के मामले में तुरंत स्नह्र्रक्र की बात कही। उन्होंने कहा- यह न केवल चिंताजनक है, बल्कि यह हमारी न्यायपालिका की नींव को हिला देने वाला है।

इस मामले की जड़ तक जाने की जरूरत है। कैश कहां से आया, ये जानना बहुत जरूरी है। केंद्र स्तर पर सरकार मजबूर है, क्योंकि 90 के दशक की शुरुआत में दिए गए सुप्रीम कोर्ट के आदेश के कारण जस्टिस पर एफआईआर दर्ज नहीं की जा सकती है।

धनखड़ ने नेशनल एडवांस्ड लीगल स्टडीजयूनिवर्सिटी के सेमिनार में ये बातें कहीं। दरअसल, दिल्ली हाईकोर्ट के

जस्टिस यशवंत वर्मा के लुटियंस दिल्ली स्थित घर में 14 मार्च की रात आग लगी थी। उनके घर के स्टोर रूम में 500-500 रुपए के जले नोटों के बंडलों से भरे बोरे मिले थे। इसके बाद से ये सवाल खड़ा हुआ कि इतना कैश कहां से आया।

भोपाल की गर्भवतियों पर हुई रिसर्च अंतरराष्ट्रीय मंच पर पेश

भोपाल (एजेंसी)। गर्भवती यदि एक तय पैटर्न में सांस ले तो यह असहनीय पीड़ा को कम करने और डिलीवरी प्रक्रिया को सहज बनाने में मदद करता है। दरअसल, प्रसव पीड़ा शुरू होने से लेकर प्लैसेंटा की डिलीवरी तक कुल 3 स्टेज होती हैं। अलग-अलग स्टेज में अलग अलग ब्रीथिंग एक्सरसाइज करनी चाहिए। ऐसा करने से इस पूरी प्रक्रिया का अनुभव बेहतर होता है। यह तथ्य एम्स भोपाल की नर्सिंग स्टूडेंट कुमारी डिंपल द्वारा की गई रिसर्च से सामने आए। जो कि नर्स-नेतृत्व वाली ब्रीदिंग एक्सरसाइज (सांस लेने के व्यायाम) तकनीक पर आधारित रही। यह रिसर्च को डॉ. लिली पोद्दार (एसोसिएट प्रोफेसर, एम्स भोपाल) के निर्देशन में किया गया। जिसमें डॉ. ज्योति नाथ मोदी, डॉ. ममता वर्मा, डॉ. अमित अग्रवाल, डॉ. सैकेत दास समेत अन्य शिक्षकों ने सहयोग दिया। एम्स भोपाल की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. लिली पोद्दार ने इस रिसर्च को अंतरराष्ट्रीय नर्सिंग कांग्रेस में पेश किया। यह कांग्रेस 5 जुलाई को फिनलैंड के हेलसिंकी शहर में आयोजित हुआ। जिसमें 130 से अधिक देशों के 7,000 से ज्यादा स्वास्थ्य पेशेवर, नीति निर्माता और शिक्षक मौजूद रहे। एम्स भोपाल की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. लिली पोद्दार ने इस रिसर्च को अंतरराष्ट्रीय नर्सिंग कांग्रेस में पेश किया। यह कांग्रेस 5 जुलाई को फिनलैंड के हेलसिंकी शहर में आयोजित हुआ। जिसमें 130 से अधिक देशों के 7,000 से ज्यादा स्वास्थ्य पेशेवर, नीति निर्माता और शिक्षक मौजूद रहे। प्रसव की पूरी प्रक्रिया तीन स्टेज में होती हैं। इनमें अलग अलग तरीके से सांस लेना यानी ब्रीथिंग एक्सरसाइज करने की सलाह दी जाती है।

इसी को देखते हुए शोधकर्ताओं ने 35 सप्ताह की प्रेग्नेंसी के बाद से ही महिलाओं को ब्रीथिंग एक्सरसाइज की प्रेक्टिस करानी शुरू कर दी थी।

भोपाल में 2 अवैध कॉलोनियों पर बड़ी कार्रवाई

भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के खेजड़ा बरामद में विकसित हो रही 2 अवैध कॉलोनियों पर शनिवार को जिला प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई की। गोविंदपुरा एसडीएम रवीशकुमार श्रीवास्तव की मौजूदगी में अमले ने पक्की सड़क और बाउंड्रीवॉल तोड़ दी। जमीन की सरकारी कीमत 12 करोड़ रुपए से ज्यादा है। वहीं, 2 करोड़ रुपए कीमत की सरकारी जमीन से भी अवैध कब्जा हटाया गया। एसडीएम श्रीवास्तव ने बताया, ग्राम खेजड़ा बरामद में 3.46 शासकीय भूमि में से 0.40 एकड़ भूमि पर पक्का रोड व बाउंड्रीवॉल बनाकर अतिक्रमण कर लिया गया था। यहां कार्रवाई करते हुए अवैध कब्जा हटाया गया।

जमीन की कीमत 2 करोड़ रुपए है। इस शासकीय भूमि से लगी 2.81 एकड़ निजी भूमि पर बिना सक्षम अनुमति के राहुल पाल एवं रोहित मीणा अवैध तरीके से कॉलोनी विकसित कर रहे थे। छोटे-छोटे प्लॉट काटकर वे श्री श्याम सिटी नाम से अवैध कॉलोनी विकसित कर रहे थे। यहां कार्रवाई करते हुए पक्की सड़क और बाउंड्रीवॉल को तोड़ दिया गया। इस जमीन की कीमत 10.50 करोड़ रुपए है।

आपदा में एंबुलेंस ही नहीं, अब पूरा अस्पताल पहुंचेगा.

भोपाल (एजेंसी)। आपदा या युद्ध जैसी स्थिति में अब अस्पताल खुद चलकर मरीजों के पास पहुंचेगा। एम्स भोपाल को हाईटेक पोर्टेबल ट्रॉमा सेंटर आरोग्य मैत्री हेल्थ क्यूब मिल गया है। यह 20 मिनट में पूरी तरह 200 बेड का फंक्शनल अस्पताल बन जाता है। 12 मिनट में ऑपरेशन थिएटर तैयार हो जाता है। यह तकनीक रक्षा मंत्रालय के प्रोजेक्ट आरोग्य मैत्री के तहत तैयार की गई है। आरोग्य मैत्री को पहली बार जनवरी में अयोध्या में रामलला प्राण प्रतिष्ठा के दौरान प्रदर्शित किया गया था। अब इसका एक यूनिट एम्स भोपाल को सौंपा गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान यूक्रेन को भी यह पोर्टेबल अस्पताल गिफ्ट किया था। अब यह तकनीक आम जनता की जान बचाने के लिए भारत में इस्तेमाल होगी। आरोग्य मैत्री बिजली, पानी, जीवनरक्षक दवाओं, जांच उपकरण और टेलीमेडिसिन जैसी सुविधाओं से लैस है। यह पहाड़ी, ग्रामीण और सीमावर्ती इलाकों में तुरंत तैनात किया जा सकता है। एम्स भोपाल में 4 जुलाई को इसका लाइव डेमो हुआ। एम्स डायरेक्टर डॉ. अजय सिंह ने कहा, यह ट्रॉमा केयर की क्रांति है। आपदा के समय मरीज की जान बचाने के लिए यह सबसे असरदार समाधान है।

आरोग्य मैत्री 72 घंटे तक 200 मरीजों का इलाज कर सकता है। इसमें एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड, मॉनिटरिंग डिवाइस जैसी सुविधाएं हैं। पूरी यूनिट को पैराशूट से एयर ड्रॉप किया जा सकता है। इसका सफल परीक्षण हो चुका है।

बिना इंटरनेट भी एप सीपीआर देना सिखाता है... कार्यक्रम में डॉ. भूपेश्वरी पटेल ने कोड इमरजेंसी नाम का मोबाइल एप भी लॉन्च किया। यह एप बिना इंटरनेट के सीपीआर देना सिखाता है।

सागर में पेपरलेस इलेशन के लिए अलग से जाएगी टीम

भोपाल (एजेंसी)।। पेपरलेस इलेक्शन के लिए देश भर में मॉडल बने राज्य निर्वाचन आयोग ने पंचायत उप चुनाव में सागर में होने वाले जनपद सदस्य और सरपंचों के चुनाव में पेपरलेस मॉडल अपनाने का फैसला किया है। इसके लिए चुनाव से पहले तीन बार यहां राज्य निर्वाचन आयोग के अफसरों की टीम दौरा करेगी। इतना ही नहीं आयोग ने इसके लिए 12.50 लाख रुपए के विशेष बजट का भी प्रावधान किया है। सागर जिले में 22 जुलाई को 16 मतदान केंद्रों में होने वाले पंचायत एवं जनपद पंचायत के मतदान के लिए राज्य निर्वाचन आयोग से तीन चरणों में उप सचिव एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों का दल जाएगा। सागर के जनपद पंचायत बीना एवं चार ग्राम पंचायतों के सरपंच के लिए चुनाव हो रहा है। राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा पहली बार नवाचार के रूप में इतनी बड़ी संख्या में पेपरलेस इलेक्शन कराया जा रहा है। इस निर्वाचन में एक साथ पहली बार 16 मतदान केंद्रों में पेपरलेस निर्वाचन होगा। राज्य निर्वाचन आयोग के आयुक्त मनोज श्रीवास्तव एवं सचिव अभिषेक सिंह ने इसको लेकर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सागर कलेक्टर संदीप जीआर से चर्चा कर कार्य योजना बनाई गई है।

एशियाई निशानेबाजी चैंपियनशिप में जीत का पताका फहराएंगी मनु भाकर

नई दिल्ली (एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक में दो मेडल जीतने वाली मनु भाकर को कजाकिस्तान में होने वाली 16वीं एशियाई चैंपियनशिप के लिए भारतीय निशानेबाजी टीम में जगह मिली है। 16 से 30 अगस्त तक होने वाले इस टूर्नामेंट के लिए सोमवार को 35 सदस्यीय टीम घोषित की गई है।

मनु इसमें शामिल एकमात्र ऐसी निशानेबाज हैं जो दो व्यक्तिगत स्पर्धा में हिस्सा लेंगी। भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ द्वारा घोषित अन्य टीमें सितंबर-अक्टूबर में होने वाले आईएसएसएफ जूनियर वर्ल्ड कप और जूनियर एशियाई चैंपियनशिप के लिए हैं, जो सीनियर प्रतियोगिता के साथ ही होगी। एआरएआई ने चीन के निंगबो में होने वाले आईएसएसएफ वर्ल्ड कप के लिए सीनियर टीम की घोषणा भी कर दी है। ये प्रतियोगिता सात से 15 सितंबर तक आयोजित की जाएगी। इस प्रमुख एशियाई प्रतियोगिता के लिए सीनियर टीम में 35 सदस्य हैं जो तीन मिश्रित टीम सहित 15 स्पर्धाओं में भाग लेंगे। मनु महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल और महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल स्पर्धाओं में प्रतिस्पर्धा करेंगी। सीनियर टीम में वापसी करने वाले प्रमुख खिलाड़ियों में पुरुष एयर राइफल के पूर्व वर्ल्ड चैंपियन रुद्राक्ष पाटिल और ओलंपियन अंजुम मौदगिल, ऐश्वर्या प्रताप सिंह तोमर, सौरभ चौधरी और केनान चेनाई शामिल हैं।

इंग्लैंड कोच ब्रेंडन मैक्कुलम का टूटा घमंड

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया ने इंग्लैंड को उसी के घर पर उसके अंदाज में ही खेलकर हराकर सीरीज में 1-1 की बराबरी हासिल कर ली है। इस हार के बाद इंग्लैंड के मुख्य कोच ब्रेंडन मैक्कुलम ने माना दूसरे टेस्ट में उनकी टीम की भारी हार राजनीतिक गलती थी। हार के बारे में बात करते हुए मैक्कुलम ने माना टॉस के समय उनकी टीम ने एक गलती कर बैठी।

सोचा नहीं था कि पिच ऐसा खेल दिखाएगी और इतने सारे रन बन जाएंगे। फ्लैट ट्रैक पर इंग्लैंड ने भारत को पहली पारी में 200 रन पर 5 विकेट गिरने के बाद वापसी का मौका दिया। गिल के बेहतरीन दोहरे शतक के दम पर भारत ने 587 रन का बड़ा स्कोर खड़ा कर दिया। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जहां बेअसर दिखे वहीं मोहम्मद सिराज और आकाशदीप ने एजबेस्टन की पिच को समझा और अपनी बेहतरीन गेंदबाजी के दम पर मेजबान टीम को 407 रन पर समेट दिया। बर्मिंघम टेस्ट के आखिरी दिन भारत ने आकाशदीप के दूसरी पारी में 6 विकेट के दम पर 336 रन की बड़ी जीत दर्ज की। एजबेस्टन में पहली बार किसी भारतीय टीम को टेस्ट जीत मिली है। इंग्लैंड के सामने भारत ने जीत के लिए 608 रन का विशाल लक्ष्य रख दिया। यहां से उनके लिए जीतना नामुमकिन हो गया था।

मैकुलम ने कहा कि उन्होंने टॉस के समय एक मौका गंवाया और पूरे मैच में पिछड़ गए। मैकुलम ने बीबीसी टेस्ट मैच स्पेशल को बताया कि, मुझे लगता है कि जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ा, हमने शायद उस टॉस को देखा और कहा कि क्या हमने वहां एक मौका गंवाया और ये शायद सही है। इंग्लैंड ने हेडिंग्ले में भी पहले गेंदबाजी करने का फैसला लिया और पहली पारी में 470 से ज्यादा रन लीक किए।

सचिन ने नये कप्तान शुभमन को पहली जीत पर बधाई दी

मुम्बई (एजेंसी)। महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने भारतीय टेस्ट टीम के नये कप्तान शुभमन गिल को उनकी पहली जीत के लिए बधाई दी है। शुभमन की कप्तानी में भारतीय टीम ने इंग्लैंड के खिलाफ 336 रनों की रिकार्ड जीत दर्ज की है। सचिन ने इस मैच में 10 विकेट लेकर भारतीय टीम की जीत में अहम भूमिका निभाने वाले युवा तेज गेंदबाज आकाशदीप सिंह की भी जमकर प्रशंसा की है। वहीं शुभमन ने पहली पारी में दोहरा शतक और दूसरी पारी में शतक लगाया था। सचिन ने इस मैच में अच्छे प्रदर्शन के लिए शुभमन के अलावा अक्रामक विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत, केएल राहुल और ऑलराउंडर रविन्द्र जडेजा को भी सराहा। इसके अलावा मोहम्मद सिराज को शानदार कैच के लिए विशेष बधाई दी। सिराज ने मेजबान बल्लेबाज जोश टंग का बेहद कठिन कैच लिया था। उन्होंने लिखा, शुभमन भारतीय टीम को शानदार टेस्ट जीत दिलाने के लिए बधाई हो। उन्होंने इसके साथ ही ऋषभ पंत, राहुल, और जडेजा की भी तारीफ की। गेंदबाजों ने जिस तरीके से सटीक गेंदबाजी की, वह मुझे सबसे अच्छी लगी। आकाश दीप ने अपने प्रदर्शन से जीत जीत लिया। मेरे अनुसार उन्होंने जो रूट को सीरीज की अब तक की सबसे अच्छी गेंद की थी।

वियान मुल्डर ने ठोके टेस्ट मैच में सबसे तेज 350 रन, तोड़ दिया ये वर्ल्ड रिकॉर्ड

नई दिल्ली (एजेंसी)। साउथ अफ्रीका के कप्तान वियान मुल्डर ने जिम्बाब्वे के खिलाफ दूसरे टेस्ट में 367 रनों की पारी खेली। वो नाबाद रहे और उन्होंने लंच ब्रेक के बाद पारी घोषित कर दी। इस तरह वियान मुल्डर 400 रन बनाने के रिकॉर्ड से चूक गए। उनकेपास 400 रन बनाने का मौका था उनके पास मौका था कि वो ब्रायन लारा का रिकॉर्ड तोड़ दें लेकिन इस खिलाड़ी ने टीम के लिए पारी घोषित करने का फैसला किया। वियान मुल्डर 400 रन तो नहीं बना सके लेकिन उन्होंने टेस्ट क्रिकेट का एक ऐसा रिकॉर्ड बनाया है जिसे तोड़ने में हर किसी बल्लेबाज के पसीने छूट जाएंगे।

वियान मुल्डर के नाम टेस्ट क्रिकेट में सबसे तेज 350 रन बनाने का रिकॉर्ड दर्ज हो गया है। वियान मुल्डर ने महज 324 गेंदों में इस कारनामे को अंजाम दिया। इससे पहले ये रिकॉर्ड मैथ्यू हेडन के नाम था जिन्होंने साल 2003 में जिम्बाब्वे के खिलाफ ही 402 गेंदों में 350 रन बनाए थे। मतलब वियान मुल्डर एकलौते क्रिकेट हैं जिन्होंने 100 से ज्यादा की स्ट्राइक रेट से टेस्ट में 350 रन ठोक दिए हैं। टेस्ट क्रिकेट में सिर्फ 5 बल्लेबाजों ने 350 से ज्यादा रनों की पारी खेली है। जिसमें सबसे तेजी से ये कारनामा करने वाले खिलाड़ी वियान मुल्डर हैं। दूसरे नंबर पर मैथ्यू हेडन हैं। तीसरा स्थान ब्रायन लारा का है। उन्होंने 494 गेंदों में इंग्लैंड के खिलाफ ये कमाल किया था। 1994 में लारा ने 510 गेंदों में 350 रनों की पारी खेली थी। साल 2006 में महेला जयवर्धने ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ 534 गेंदों में 350 रन पूरे किए थे। गैरी सॉबर्स ने पाकिस्तान के खिलाफ 557 गेंदों में 350 रन बनाने का कारनामा किया था।

मेरी चिंता मत करो, बस देश के लिए अच्छा करो... कैंसर पीड़ित बहन ने भाई आकाशदीप पर लुटाया प्यार

नई दिल्ली। भारत के तेज गेंदबाज आकाशदीप ने इंग्लैंड के खिलाफ एजबेस्टन में खेले गए दूसरे टेस्ट मैच में बेहतरीन प्रदर्शन किया। उन्होंने 10 विकेट लेकर टीम को 336 रनों से जीत दिलाई। जसप्रीत बुमराह की जगह टीम में शामिल हुए आकाश ने अपनी गेंदबाजी से भारत को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। मैच के बाद आकाश ने ये प्रदर्शन अपन बहन अखंड ज्योति को समर्पित किया। बता दें कि, ज्योति कैंसर से जूझ रही हैं और उनका इलाज चल रहा है। ज्योति ने आकाश से इस समर्पण पर भावुक प्रतिक्रिया दी है। बता दें कि, आकाशदीप की बहन स्टेज तीन के कैंसर से लड़ रही

हैं। उन्होंने इस दौरान बताया कि मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि आकाश ऐसा कुछ कहेगा। शायद हम इसके बारे में सार्वजनिक रूप से बात करने के लिए तैयार नहीं थे, लेकिन जिस तरह से वह भावुक हो गया और मेरे लिए ये बात कही। इसे मुझे समर्पित किया। ये बहुत बड़ी बात है। ये दिखाता है कि वह हमारे परिवार और मुझसे कितना प्यार करता है। घर पर ऐसी स्थिति होने के बाद भी उसने वहां ऐसा प्रदर्शन किया और विकेट झटके। ये बहुत बड़ी बात है। मैं वह हूं जिसके वह सबसे करीब है। साथ ही ज्योति ने याद करते हुए बताया कि, इंग्लैंड दौरे पर जाने से पहले वह आकाश से हवाई अड्डे पर मिली थईं और उन्होंने उससे कहा था कि वह अपने क्रिकेट पर ध्यान दे। उन्होंने कहा कि, ये भारत के लिए गर्व की बात है।

लॉर्ड्स टेस्ट से पहले इंग्लैंड कप्तान बेन स्टोक्स ने मानी हार! जसप्रीत बुमराह को लेकर कही ये बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह एजबेस्टन टेस्ट में नहीं खेले लेकिन इसके बावजूद इंग्लैंड को भारतीय टीम ने घुटनों पर ला दिया। भारत ने एजबेस्टन टेस्ट 336 रनों से जीता। वहीं अब इस करारी हार के बाद इंग्लैंड की टीम में खौफ का माहौल है। बेन स्टोक्स दरअसल, बुमराह की वापसी को लेकर परेशान हैं। उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि जसप्रीत बुमराह जैसे गेंदबाज के खिलाफ तैयारी करना ही नामुमकिन है।

दरअसल, एजबेस्टन टेस्ट जीतने के बाद भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि बुमराह 10 जुलाई से शुरू होने वाले तीसरे टेस्ट में वापसी करेंगे स्टोक्स इस बार से ज्यादा खुश नहीं थे कि उन्हें एक बार फिर बुमराह के बारे में सवालों के जवाब देने होंगे। बेन स्टोक्स ने कहा कि, मैंने सोचा था कि मैं बिना जसप्रीत बुमराह के सवाल के प्रेस कॉन्फ्रेंस पूरी कर लूंगा। हम इतनी बार एक-दूसरे के खिलाफ खेलते हैं कि हमें पता है कि क्या सामना करना पड़ेगा। हम इसे ट्रेनिंग में भी लागू करते हैं। हम साइड आर्म गेंदबाजी के खिलाफ प्रैक्टिस करते हैं लेकिन वो बुमराह मैच में करते हैं वैसा प्रैक्टिस में कर पाना मुश्किल होता है। जसप्रीत बुमराह लॉर्ड्स में वापसी करेंगे तो क्या इंग्लैंड की टीम जोफ्रा आर्चर को उतारेगी? इस पर स्टोक्स ने कहा कि वो उनकी हालत देखकर ही कोई फैसला लेंगे। स्टोक्स का मनना है कि एक टीम के तौर पर इंग्लैंड को संतुलित रहना होगा, न तो जीत के बाद बहुत उत्साहित होना चाहिए और न ही हार के बाद बहुत निराश। उन्होंने कहा कि, हमने कुछ बेहतरीन जीत हासिल की हैं और कुछ बुरी हार भी देखी हैं।

44 साल के हुए कैप्टन कूल एमएस धोनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्रिकेट जगत में कैप्टन कूल के नाम से जाने जाने वाले टीम इंडिया के पूर्व कप्तान एमएस धोनी 7 जुलाई को अपना 44वां जन्मदिन मना रहे हैं। दुनिया के सबसे महानतम कप्तानों में शुमार महेंद्र सिंह धोनी का जन्म 1981 में बिहार के रांची (जो अब झारखंड में है) शहर में हुआ था। अपनी कप्तानी में भारतीय क्रिकेट को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने वाले धोनी ने साल 2020 में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था, अब वह सिर्फ आईपीएल में खेलते हुए दिखते हैं। पिछले सीजन उन्होंने ऋतुराज गायकवाड़ की जगह

टीम की कप्तानी की थी। एमएस धोनी के पिता का नाम पान सिंह और मां का नाम देवकी देवी है। हालांकि, कोच की सलाह के बाद वह क्रिकेट खेलने लगे । साथ ही 2001 से 2003 तक धोनी ने भारतीय रेलवे में बतौर काम भी किया।

पूरी दुनिया में एमएस धोनी की फैन फॉलोइंग किसी से छुपी नहीं है। जब कभी भी धोनी मैदान में उतरते हैं तो पूरा मैदान उनके रंग में रंग जाता है। 2007 में जब उनकी कप्तानी में टीम इंडिया ने टी2 वर्ल्ड कप जीता उसके बाद तो उनके प्रति फैंस की दिवानगी सातवें आसमान पर थीं। इसके बाद 2011 में वनडे वर्ल्ड कप और फिर 2013 में चैंपियंस ट्रॉफी भारत को दिलाने वाले एकमात्र कप्तान बने। इसके अलावा धोनी को कई और बड़े अवॉर्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

धोनी ने आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स को अपनी कप्तानी में पांच बार चैंपियन भी बनाया है। इसके अलावा उन्हें 2008 में मेजर ध्यानचंद खेल रत्न अवॉर्ड से नवाजा गया।

फिर 2009 में पद्मश्री अवॉर्ड, 2013 में आईसीसी पीपल चॉइस अवॉर्ड, 2018 में पद्मभूषण जैसे बड़े अवार्ड्स से उन्हें सम्मानित भी किया गया।

जय शाह ने शुभमन गिल, आकाशदीप, रविंद्र जडेजा, ऋषभ पंत की तारीफ

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की जीत में शुभमन गिल, यशस्वी जायसवाल, ऋषभ पंत, आकाशदीप, मोहम्मद सिराज और रविंद्र जडेजा का अहम योगदान रहा। वहीं टीम इंडिया की इस जीत के बाद बधाइयों का तांता लग गया है। इसी कड़ी में आईसीसी चेयरमैन जय शाह ने भी टीम इंडिया को सराहा लेकिन फैंस ने उन्हें ट्रोल कर दिया।

शुभमन गिल की कप्तानी में टीम इंडिया ने इंग्लैंड को टीम को हराकर एजबेस्टन में इतिहास रच दिया। इसके साथ ही भारतीय टीम एशिया की पहली टेस्ट टीम है जिसने बर्मिंघम में मैच जीता है। भारत की जीत में शुभमन गिल, यशस्वी जायसवाल, ऋषभ पंत, आकाशदीप, मोहम्मद सिराज और रविंद्र जडेजा का अहम योगदान रहा। वहीं टीम इंडिया की इस जीत के बाद बधाइयों का तांता

लग गया है। इसी कड़ी में आईसीसी चेयरमैन जय शाह ने भी टीम इंडिया को सराहा लेकिन फैंस ने उन्हें ट्रोल कर दिया। दरअसल, जय शाह ने ट्वीट करते हुए टीम इंडिया को जीत की बधाई दी। इस दौरान शाह ने अपने पोस्ट में शुभमन गिल, आकाशदीप, रविंद्र जडेजा और ऋषभ पंत की अलग से तारीफ की लेकिन मोहम्मद सिराज का नाम नहीं लिया। जय शाह की पोस्ट में मैच में 7 विकेट लेने वाले सिराज का नाम नहीं देखने के बाद सोशल मीडिया यूजर्स भड़क गए और उन पर क्रिकेट में भी हिन्दू-मुस्लिम करने का आरोप लगाया। जय शाह ने एक्स पर अपनी पोस्ट में लिखा कि, ये एक उत्कृष्ट टेस्ट मैच था, जिसमें भारतीय क्रिकेट की गहराई और लचीलेपन का प्रदर्शन हुआ। गिल की 269 और 161 रन की पारी असाधारण थी, जबकि आकाशदीप के 10 विकेट ने एक बेहतरीन प्रदर्शन किया।

रविंद्र जडेजा और ऋषभ पंत के बहुमूल्य योगदान ने टीम को जीत दिलाई। लॉर्ड्स में होने वाले अगले मुकाबले का बेसब्री से इंतजार है। जय शाह की ये पोस्ट थोड़ी ही देर में वायरल हो गई। उनकी पोस्ट पर यूजर्स ने लिखा कि, जडेजा तक का नाम ले लिया पर सिराज का नाम नहीं लिया। शुक्र है कि सिराज नहीं खेल रहे थे,वरना हम पहली पारी में बढ़त नहीं ले पाते। कई यूजर्स ने जय शाह पर हिंदू मुसलमान करने का आरोप भी लगा दिया।

जानें कौन हैं आईसीसी के नए सीईओ संजोग गुप्ता? खेल रणनीति और व्यावसायीकरण के हैं महारथी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी ने संजोग गुप्ता को मुख्य कार्यकारी अधिकारी यानी सीईओ नियुक्त किया है। संजोग वैश्विक मीडिया और मनोरंजन क्षेत्र में जाना माना चेहरा हैं। उन्होंने 7 जुलाई से अपना कार्यभार संभाल लिया है। इसके साथ ही वह अब तक आईसीसी इतिहास के 7वें सीईओ हैं। उनकी नियुक्त पर आईसीसी चेयरमैन जय शाह ने कहा कि, संजोग के पास खेल रणनीति और व्यावसायीकरण का काफी अनुभव हैं जो आईसीसी के लिए अमूल्य होगा। संजोग की नियुक्ति ऐसे समय पर हुई है जब क्रिकेट को ओलंपिक में शामिल किया गया है। उनका भी मानना है कि ओलंपिक में शामिल होने से क्रिकेट को वैश्विक स्तर पर और प्रसिद्धि मिलेगी, ये इस खेल को लिए अच्छी बात है। इस पद के लिए 25 देशों से

2,500 से ज्यादा आवेदन आए थे। आईसीसी की एचआर और रेम्यूनरेशन कमेटी ने 12 उम्मीदवारों को सेलेक्ट किया। इस पद के लिए अंतिम चयन नॉमिनेशन कमेटी ने किया। बोर्ड ने सभी की सहमति से संजोग गुप्ता को नया सीईओ नियुक्त किया। वहीं संजोग ने कहा कि, ये मौका पाना सौभाग्य की बात है, खासकर ऐसे समय में जब क्रिकेट अभूतपूर्व विकास के लिए तैयार है और दुनिया भार में लगभग 2 बिलियन फैंस का समर्थन प्राप्त है। खेल के लिए ये रोमांचक समय है क्योंकि प्रमुख आयोजनों का कद बढ़ रहा है। व्यावसायिक रास्ते बढ़ रहे हैं और महिलाओं के खेल जैसे मौके लोकप्रियता के पैमाने पर बढ़ रहे हैं। लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक खेलों में क्रिकेट का शामिल होना दुनिया में क्रिकेट को और ऊंचाई पर ले जाएगा। मैं क्रिकेट के विकास के अगले चरण में योगदान देने इसके वैश्विक पदचिह्न का विस्तार करने, फैंस अनुभव को बढ़ाने और हमारी मजबूत नींव पर निर्माण करने के लिए आईसीसी सदस्य बोर्डों के साथ मिलकर काम करने के लिए उत्सुक हूं। फिलहाल, संजोग गुप्ता जियो स्टार में स्पोर्ट्स एंड एक्सपीरियंस के सीईओ थे। उन्हें इस क्षेत्र में 20 साल से ज्यादा का अनुभव है। वह पत्रकार रह चुके हैं 2004 में वह स्टार न्यूज इंडिया से जुड़े थे। इसके बाद उन्होंने कई मीडिया संस्थानों में काम किया। 2020 में वह डिज्नी स्टार के स्पोर्ट्स हेड बने, 2024 में डिज्नी स्टार और वाइकाम-18 के मर्ज होने के बाद वह जियो स्टार के सीईओ बने।

सेंट्रल किचन के विरोध में स्व-सहायता समूह कार्यकर्ता संघ ने किया प्रदर्शन, कार्यवाही न होने पर आंदोलन की चेतावनी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भारतीय मजदूर संघ से संबद्ध स्व-सहायता समूह कार्यकर्ता संघ ने ग्रामीण क्षेत्रों में सेंट्रल किचन शुरू करने के प्रस्ताव का विरोध करते हुए जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपा। कार्यकर्ताओं ने विधायक नागेंद्र सिंह को अपनी शिकायत बताई कि वे 20 वर्षों से स्कूलों में मध्याह्न भोजन योजना के तहत कार्य कर रहे हैं, लेकिन सेंट्रल किचन शुरू होने से उनकी आजीविका खतरे में पड़ जाएगी।

विधायक ने जिला कलेक्टर को पत्र लिखकर कार्यवाही का आश्वासन दिया। इसके बाद कार्यकर्ता और स्व-सहायता समूह की महिलाएं कलेक्ट्रेट पहुंचीं और जनसुनवाई में शिकायत दर्ज की। शाम 4 बजे कलेक्टर से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा गया। कलेक्टर ने पत्र को जिला पंचायत, रीवा को कार्यवाही के लिए भेजा। जिला पंचायत में सीईओ से मुलाकात के दौरान सीईओ ने आश्वासन दिया कि पत्र को पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्रालय, भोपाल को अभिमत के साथ भेजकर समस्या के समाधान का प्रयास किया जाएगा। ज्ञापन सौंपने वालों में राम सुशील चौरसिया, विकास शुक्ला, बाबूलाल साकेत, संतोष विश्वकर्मा, बृजेश सिंह, बृजेश मिश्रा, प्रभा सिंह, बेबी सेन, मुन्नी यादव, गायत्री विश्वकर्मा, ललित सेन, प्रीति विश्वकर्मा, सीमा कुशवाहा, नेता विश्वकर्मा, उर्मिला तिवारी, पार्वती यादव, रेनू विश्वकर्मा, रानी यादव, गोमती बाई कोल, कमला चौरसिया, सोनिया विश्वकर्मा सहित कई स्व-सहायता समूह की महिलाएं शामिल थीं। कार्यकर्ताओं ने चेतावनी दी कि यदि शीघ्र कार्यवाही नहीं हुई तो आंदोलन किया जाएगा।

सतना में प्रधान आरक्षक की संदिग्ध हालत में मौत

घर के बाहर बेहोश मिले, वायरलेस शाखा में ऑपरेटर के पद पर थे पदस्थ

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के कोलगवां थाना क्षेत्र के कृपालपुर स्थित हरिजन बस्ती में मंगलवार शाम प्रधान आरक्षक जगमोहन चौधरी (60) की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। वह एसपी ऑफिस स्थित वायरलेस शाखा में ऑपरेटर के पद पर पदस्थ थे।

मंगलवार शाम करीब 4 बजे जब उनकी पत्नी किराना लेने बाहर गई थीं, उसी दौरान मोहल्लेवालों ने देखा कि जगमोहन घर के बाहर बेहोशी की हालत में गिरे हुए हैं। पड़ोसियों ने परिजनों को सूचना दी और उन्हें जिला अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

कोलगवां थाना पुलिस ने मौके का मुआयना किया और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा है। अधिकारियों का कहना है कि मौत के कारणों का पता रिपोर्ट आने के बाद ही चल सकेगा।

ढाई माह के बेटे की हत्या करने वाली मां दो साल बाद गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले के मनगवां में एक दिल दहलाने वाली घटना में मां प्रिया गुप्ता ने अपने ढाई महीने के बेटे लक्ष्य उर्फ धैर्य गुप्ता की गला दबाकर हत्या कर दी थी। यह घटना 6 जनवरी 2023 की है, लेकिन दो साल बाद मंगलवार, 6 जुलाई 2025 को पुलिस ने आरोपी मां को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

मृतक बच्चे के पिता प्रकाश गुप्ता ने दो साल तक इंसाफ के लिए संघर्ष किया। उन्होंने पुलिस को एक मोबाइल रिकॉर्डिंग सौंपी, जिसमें प्रिया ने अपने बेटे की हत्या की बात कबूली थी। भोपाल की फॉरेंसिक साइंस लैब (एफएसएल) से रिकॉर्डिंग की जांच, पोस्टमार्टम रिपोर्ट और गवाहों के बयानों के आधार पर मनगवां पुलिस ने प्रिया के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया।पुलिस पूछताछ में प्रिया ने बताया कि घटना वाली रात वह अपने देवर राकेश गुप्ता की गाली-गलौच से परेशान थी। पति प्रकाश से संपर्क न होने पर गुस्से में उसने बच्चे को दूध पिलाया, जिसने उल्टी कर दी। इससे नाराज होकर उसने बच्चे का मुंह करीब 5 मिनट तक दबाया, जिससे उसकी मौत हो गई। प्रिया ने कबूला कि बच्चे के छटपटाने पर भी उसने हाथ नहीं हटाया और बाद में शव को कम्बल से ढक दिया।

एसपी विवेक सिंह ने बताया कि प्रकाश गुप्ता ने शुरुआत से ही पत्नी पर शक जताया था, लेकिन प्रिया ने झूठी कहानी बनाकर सभी को गुमराह किया। प्रकाश के लगातार प्रयासों और सबूतों के आधार पर पुलिस ने कार्रवाई की। अदालत में पेशी के बाद प्रिया को केंद्रीय जेल रीवा भेज दिया गया।

एसडीओपी प्रतिभा शर्मा ने बताया कि 2023 में बच्चे की मृत्यु का प्रकरण दर्ज था, लेकिन तब पोस्टमॉर्टम नहीं कराया गया था। हाल ही में मिले साक्ष्यों और पीआई वर्कर की मेहनत से मामले का खुलासा हुआ। महिला ने कबूला कि झगड़े और बच्चे के लगातार रोने से परेशान होकर उसने उसका मुंह दबा दिया, जिससे बच्चे की मृत्यु हो गई। उसने घरवालों से बहाना बनाया कि बच्चा बीमार था या अचानक उसकी मौत हो गई, जिसे सभी ने मान लिया।

पुलिस ने आरोपी मां को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है। यह मामला पूरी तरह से घरेलू विवाद से जुड़ा है, और पुलिस ने इसकी गहन जांच शुरू कर दी है।

रीवा में जानलेवा बने सीवर लाइन प्रोजेक्ट के गड्ढे, बाइक सवार दंपति गड्ढे में गिरकर घायल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर में चल रहे सीवर लाइन प्रोजेक्ट के लिए खोदे गए गड्ढे अब लोगों की जान के लिए खतरा बन रहे हैं। मंगलवार सुबह महाजन टोला में एक दंपति, शंकर दयाल पटेल और उनकी पत्नी सविता, बाइक सहित गड्ढे में गिर गए। दोनों को चोटें आईं, लेकिन वे गंभीर रूप से घायल होने से बच गए।

हादसा उस समय हुआ जब दंपति संजय नगर से गुलाब की ओर जा रहा था। महाजन टोला में सीवर लाइन प्रोजेक्ट के तहत सड़क पर गहरे गड्ढे खोदे गए हैं। शंकर दयाल ने बताया कि एक जेसीबी को बचाने के प्रयास में उनकी बाइक अनियंत्रित होकर गड्ढे में जा गिरी। बाइक गड्ढे में फंस गई, लेकिन दंपति ने किसी तरह खुद को बचा लिया। शंकर के पैर में और सविता को मामूली चोटें आईं।

सविता ने ठेकेदारों की लापरवाही पर सवाल उठाते हुए कहा कि गड्ढे के आसपास न तो डिवाइडर हैं और न ही कोई सुरक्षा इंतजाम। रास्ता तंग होने के कारण हादसे का जोखिम और बढ़ गया। स्थानीय निवासियों का कहना है कि शहर में ऐसे गड्ढे रोजाना दुर्घटनाओं का कारण बन रहे हैं, लेकिन प्रशासन और जिम्मेदार अधिकारी मौन हैं।

महाजन टोला में असुरक्षित खुदाई ने लोगों में आक्रोश पैदा कर दिया है। नागरिकों ने प्रशासन से मांग की है कि सीवर लाइन प्रोजेक्ट के तहत सड़कों की तत्काल मरम्मत और सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की जाए ताकि भविष्य में ऐसी घटनाएं रोकी जा सकें।

63 लीटर अवैध शराब के साथ ऑटो चालक गिरफ्तार

सतना में 1.28 लाख रुपए का माल जब्त, जिगनहट ले जाई जा रही थी शराब

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिले की सिटी कोतवाली पुलिस ने मंगलवार को एक बड़ी कार्रवाई करते हुए ऑटो में अवैध शराब की खेप ले जा रहे युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 63 लीटर शराब और ऑटो जब्त किया, जिसकी कुल कीमत करीब 1.28 लाख रुपए बताई जा रही है।

मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने सोहावल बाईपास रोड के पास घेराबंदी की। कुछ देर बाद एक काले रंग का संदिग्ध ऑटो जिसकी पिछली तरफ 'राजेश कुशवाहा' लाल रंग से लिखा था, आते देखा गया। पुलिस ने जब उसे रोकने की कोशिश की तो चालक भागने लगा, जिसे पीछा कर पकड़ा गया।

गिरफ्तार युवक की पहचान राजेश कुशवाहा (20), निवासी अतरवेदिया, थाना नागौद, के रूप में हुई है। ऑटो की तलाशी लेने पर उसमें से 1 कार्टून गोवा ब्रांड अंग्रेजी शराब और 6 कार्टून देशी प्लेन शराब बरामद हुई। कुल 7 कार्टून में भरी 63 लीटर अवैध शराब जब्त की गई है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ आबकारी एक्ट की धारा 34(2) के तहत मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। बरामद शराब और ऑटो को जब्त कर लिया गया है। मामले की जांच जारी है।

युवती के साथ छेड़छाड़ और मारपीट

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले के मनगवां थाना क्षेत्र के हिनौता गांव में एक युवती के साथ छेड़छाड़ और मारपीट का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार, आरोपी ओमप्रकाश कोरी ने नहाने जा रही युवती को रास्ते में रोककर छेड़छाड़ की। युवती के विरोध करने पर आरोपी ने उसके साथ मारपीट कर दी। पीड़िता ने मनगवां थाने में आरोपी के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

अंतरजिला चोर गैंग के दो सदस्य गिरफ्तार, दो बाइक बरामद

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज में नईगढ़ी पुलिस ने अंतरजिला चोर गिरोह के दो सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया है और उनके कब्जे से 1.73 लाख रुपए की दो बाइक बरामद की हैं। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने भलुहा मोड़ से दो संदिग्धों को हिरासत में लिया। पूछताछ में आरोपियों ने नईगढ़ी और गढ़ थाना क्षेत्र में चोरी की कई वारदातों को अंजाम देना स्वीकार किया।

गिरफ्तार आरोपियों की पहचान रीवा जिले के ग्राम सेदहा निवासी 20 वर्षीय सनोज गोंड और सतना जिले के रामपुर बाघेलान के सरमनपुर बांधा निवासी 30 वर्षीय शिवलाल गोंड उर्फ लंबू के रूप में हुई है। नईगढ़ी थाना प्रभारी जगदीश सिंह ठाकुर ने बताया कि आरोपियों से चोरी का माल और दो बाइक बरामद की गई हैं। दोनों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 331(4) और 305(ए) बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया गया है।

आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। पुलिस गिरोह के अन्य सदस्यों की तलाश में जुट गई है और मामले की जांच जारी है।

बैकुंठपुर में कार और बुलेट बाइक की टक्कर, एक की मौत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले के बैकुंठपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम तेंदूर हरबी मोड़ के पास विश्वकर्मा बिल्डिंग के निकट रीवा-सिरमौर हाईवे पर बीती रात एक भीषण सड़क हादसा हुआ। तेज रफ्तार कार और बुलेट बाइक की सीधी टक्कर में बाइक सवार एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरा युवक और कार सवार लोग घायल हो गए।

जानकारी के अनुसार, रात करीब 9 बजे बुलेट बाइक पर सवार शिवम सिंह बघेल (35 वर्ष), निवासी कररिया, थाना सिरमौर, अपने दोस्त गोलू गुप्ता, निवासी सिरमौर, के साथ रीवा की ओर जा रहे थे। इसी दौरान सामने से आ रही कार से उनकी बाइक की टक्कर हो गई। हादसे में शिवम सिंह की घटनास्थल पर ही मौत हो गई, जबकि गोलू गुप्ता और कार सवार लोग घायल हो गए।

सूचना मिलते ही बैकुंठपुर पुलिस और डायल 100 की टीम मौके पर पहुंची। घायलों को तत्काल रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जबकि मृतक शिवम सिंह के शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सिरमौर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा गया। पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त कार और बाइक को जब्त कर थाने में रखवाया है और मामले की जांच शुरू कर दी है।

औद्योगिक क्षेत्र घूमा के संबंध में सुझाव 20 तक

रीवा. नई औद्योगिक नीति के तहत रीवा जिले में औद्योगिक विकास केन्द्र घूमा का विकास किया जा रहा है। इसमें अधोसंरचना विकास के कार्य पूरे हो गए हैं। नवीन औद्योगिक इकाईयों की स्थापना के लिए भूखण्डों का आवंटन किया जा रहा है। जिला महाप्रबंधक उद्योग जेपी तिवारी ने इस संबंध में कहा है कि घूमा औद्योगिक क्षेत्र में नवीन उद्यमों की स्थापना के लिए उद्योग लगाने के इच्छुक व्यक्ति, भूखण्डों की साइज तथा औद्योगिक इकाई के संबंध में अपने सुझाव 20 जुलाई तक दे सकते हैं। सुझाव ईमेल एडीआईआईडी एट द रेट एमपी जीओभी डॉट इन पर दे सकते हैं।

कृषि विकास संबंधी कार्यशाला 17 को

रीवा. मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन मण्डी बोर्ड द्वारा कृषि अवसंरचना निधि की निगरानी के लिए प्रत्येक जिले में कलेक्टर की अध्यक्षता में समिति का गठन किया गया है। इस समिति में कृषि, सहकारिता, उद्यानिकी, पशुपालन, मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास निगम, मध्यप्रदेश आजीविका मिशन, मछली पालन विभाग के अधिकारियों को शामिल किया गया है। इनकी संभागीय प्रशिक्षण कार्यशाला 17 जुलाई को आयोजित की जा रही है।

मध्यप्रदेश देश के सबसे तेज़ गति से विकास करने वाले राज्यों में अग्रणी : उप मुख्यमंत्री

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि प्रदेश सरकार स्वास्थ्य अधोसंरचना के विस्तार को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2003 में प्रदेश में केवल 5 शासकीय मेडिकल कॉलेज थे। आज यह संख्या बढ़कर 17 हो गई है। इस वर्ष दो और मेडिकल कॉलेज शुरू हो रहे हैं और आगामी वर्ष में छह नए कॉलेजों की शुरुआत प्रस्तावित है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार निजी स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र में निवेश को भी प्रोत्साहित कर रही है। सरकार का लक्ष्य है कि हर नागरिक को गुणवत्तापूर्ण उपचार सुलभ हो और इसके लिए हर संभव संसाधन पर कार्य किया जा रहा है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल होटल जहांनुमा पैलेस भोपाल में एमपी तक के विशेष कार्यक्रम "बैठक" में शामिल हुए। उन्होंने प्रदेश के विकास, स्वास्थ्य व्यवस्था के सशक्तीकरण, विंध्य क्षेत्र के विकास और अन्य समसामयिक विषयों पर विस्तार से संवाद किया।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश देश के सबसे तेज़ गति से विकास करने वाले राज्यों में शुमार है। उन्होंने कहा कि ग्लोबल इन्वेस्टर समिट, रीजनल कॉन्क्लेव से प्रदेश में विभिन्न क्षेत्रों की संभावनाओं और निवेश के अवसरों को रेखांकित किया जा रहा है। इससे स्वास्थ्य, उद्योग, पर्यटन, शिक्षा, और अधोसंरचना जैसे क्षेत्रों में पूरे प्रदेश में व्यापक और समग्र विकास हो रहा है। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि ग्रामीण और दूरस्थ अंचलों में टेलीमेडिसिन के माध्यम से विशेषज्ञों की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) को प्रथम रेफरल यूनिट के रूप में विकसित किया जा रहा है, जिससे ग्रामीणों को जिला अस्पताल तक बार-बार न जाना पड़े और उन्हें वहीं इलाज मिल जाए। सरकार ने प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक तीनों स्तरों की स्वास्थ्य सेवाओं को उन्नत तकनीकों और आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित करने की दिशा में तेज़ी से कार्य किया है।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए एयर एम्बुलेंस सेवा का संचालन किया गया है। यह मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की संवेदनशील पहल है। इसके अलावा उन्होंने अंगदान और देहदान की समाज में जागरूकता बढ़ाने के लिए सरकार की ओर से उठाए गए कदमों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने यह निर्णय लिया है कि अंगदाताओं और देहदाताओं को 'गार्ड ऑफ ऑनर' देकर श्रद्धांजलि दी जाएगी और परिजन को स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्वों पर सम्मानित भी किया जाएगा। यह एक मानवीय पहल है जो समाज में सेवा की भावना को बढ़ाएगी।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि विंध्य क्षेत्र का सर्वांगीण विकास हो रहा है। विंध्य क्षेत्र में प्राकृतिक क्षमता और अपार संभावनाएं रही हैं। राजनीतिक इच्छाशक्ति से संसाधनों को सुदृढ़ करने और समुचित उपयोग से क्षेत्र का तेज गति से विकास हुआ है। विंध्य क्षेत्र में चिकित्सा, शिक्षा, पर्यटन, उद्योग और अधोसंरचना सभी क्षेत्रों में सशक्त प्रयास किए गए हैं।

तेंदूखेड़ा विधायक की गाड़ी को बोलेरो ने मारी टक्कर

सतना में प्रयागराज जाते समय हुआ हादसा, विधायक और स्टाफ सुरक्षित

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले में नरसिंहपुर के तेंदूखेड़ा विधायक विश्वनाथ सिंह पटेल के वाहन का एक्सीडेंट हो गया। हादसा चित्रकूट मार्ग पर लेबडेल स्कूल के पास हुआ, जहां पीछे से आ रही तेज रफ्तार बोलेरो ने विधायक की गाड़ी को टक्कर मार दी। विधायक और उनका स्टाफ पूरी तरह सुरक्षित हैं। विधायक प्रयागराज जा रहे थे।

हादसे में विधायक की कार क्षतिग्रस्त हो गई। सिविल लाइन थाना पुलिस मौके पर पहुंची और बोलेरो को जब्त कर लिया गया है। यह वाहन अभयजीत सिंह निवासी दिदौन्ध के नाम पर रजिस्टर्ड है। घटना के वक्त बोलेरो में उसका पूरा परिवार भी सवार था।

हादसे के बाद विधायक को कुछ समय के लिए सतना सर्किट हाउस में रुकवाया गया। प्रशासनिक अधिकारी भी मौके पर पहुंचे और उनका हालचाल जाना।

सिविल लाइन पुलिस ने बोलेरो चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। साथ ही यह भी जांच की जा रही है कि यह हादसा महज एक दुर्घटना थी या इसके पीछे कोई साजिश है। पुलिस ने तकनीकी जांच भी शुरू कर दी है।

लापरवाह उपयंत्री की संविदा सेवा समाप्ति के आदेश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने जनपद पंचायत सिरमौर के उपयंत्री जयशंकर पटेल की संविदा सेवा तत्काल प्रभाव से समाप्त करने के आदेश दिए हैं।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत सिरमौर के प्रतिवेदन के आधार पर यह कार्यवाही मध्यप्रदेश सिविल सेवा आचरण नियम 1965 तथा 1966 के तहत की गई है। जल गंगा संवर्धन अभियान की प्रगति अत्यंत कम होने तथा प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना की निगरानी में लापरवाही बरतने पर श्री पटेल को कारण बताओ नोटिस दिया गया था। श्री पटेल द्वारा नोटिस का कोई उत्तर नहीं दिया गया। मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा श्री पटेल को समक्ष में भी सुनवाई का अवसर दिया गया, जिसमें श्री पटेल उपस्थित नहीं हुए। इसे स्वेच्छाचारिता और कर्तव्यों के प्रति गंभीर लापरवाही मानते हुए संविदा सेवा समाप्ति की कार्यवाही की गई है।

महिला शिक्षक तीन साल में तीसरी बार निलंबित,दो महीने से स्कूल नहीं आई

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के मझगवां विकासखंड के प्राथमिक स्कूल साडा की शिक्षिका सरिता सिंह को तीसरी बार निलंबित किया गया है। निलंबन के दौरान उनका मुख्यालय रामपुर बाघेलान के बीईओ कार्यालय में रहेगा।

शिक्षक पर आरोप है कि वो कई महीनों तक स्कूल नहीं आईं। जब इसकी शिकायत हुई तो उन्होंने उपस्थिति रजिस्टर में वाइटनर लगाकर अपनी हाजिरी दर्ज कर दी। जांच कमेटी के निरीक्षण में ये मामला सामने आया। जिला शिक्षा अधिकारी ने उन्हें निलंबित कर दिया। जांच में पाया गया कि सरिता सिंह 7 अप्रैल से 30 अप्रैल 2025 तक और 17 जून से लगातार स्कूल नहीं आ रही थीं। इससे पहले जुलाई 2024 में भी उन्हें निलंबित किया गया था। तब उन्होंने अपनी जगह दूसरा शिक्षक नियुक्त कर दिया था। 2023 में भी उन पर कार्रवाई हुई थी और एक वेतन वृद्धि रोकी गई थी। ग्रामीणों की शिकायत पर ये मामला सामने आया। संकुल केंद्र नकैला के अंतर्गत आने वाले इस स्कूल में पदस्थ दूसरे शिक्षक के बयान और ग्रामीणों की गवाही के आधार पर कार्रवाई की गई।

सरिता सिंह अपनी मनमानियों को लेकर अकसर विभाग के निशाने पर रही हैं।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।